टिप्पणी

30

पर्यटन-अवधारणा, संसाधन और विकास

प्राकृतिक सौन्दर्य की विविधता अन्तहीन है। ऐसे ही, मानव में अपने अन्तर मन से प्रकृति की सराहना करने की अनन्त इच्छा है। इसलिए आदिकाल से अन्वेषकों, खोजकर्ताओं और पर्यटकों ने रास्ते में आने वाली समस्त कठिनाइयों के बावजूद जोखिमपूर्ण यात्राएं की। उसके सौन्दर्य की सराहना करने के वास्ते भ्रमण करने के अंतःर्निहित विचार ने आधुनिक उद्योग, जिसे पर्यटन कहा जाता है, को जन्म दिया है। पर्यटन उद्योग का यह काम है कि वह सौन्दर्य और रुचि के ऐसे स्थान खोजे जो लोगों को विभिन्न दृष्टिकोणों से आकर्षित करने वाले हों और सभी प्रकार की सुविधा प्रदान करता हो। अतः प्राकृतिक सौन्दर्य, अनुकूल मौसम एवं जलवायु और सांस्कृतिक विरासत को, पर्यटन संवर्धन के जरिये क्षेत्रीय विकास के लिये इस्तेमाल किया जाता है। इस पाठ में, हम पर्यटन का अर्थ, पर्यटकों के प्रकार और विभिन्न पर्यटन स्थलों के लिये आर्कषण का अध्ययन करेंगे और पर्यटन तथा आधुनिक पर्यटन के विकास के लिए विभिन्न पर्यटक संसाधनों के योगदान की जरूरत के बारे में भी पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात् आप:

- पुराने समय के भ्रमण/यात्रा को आज के पर्यटन में रूपान्तर की प्रक्रिया को स्पष्ट कर सकेंगें;
- विभिन्न प्रकार के पर्यटन और संबंधित उद्देश्यों की चर्चा कर सकेंगें;
- भारत के पर्यटन संसाधनों की विविधता और मूल्य को स्पष्ट कर पाएंगे;
- पर्यटन की वृद्धि के लिए उत्तरदायी कारणों और कारकों को स्पष्ट कर सकेंगे;

टिप्पणी

- पर्यटन संवर्धन के जरिये क्षेत्रीय विकास का विश्लेषण कर सकेंगे;
- भारत के भिन्न प्रदेशों में भिन्न–भिन्न आर्कषण के लिये प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों का पता लगा पाएंगे और उनका वर्गीकरण कर सकेंगे।

30.1 पर्यटन का अर्थ और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक

पर्यटन अपने आधुनिक रूप में, प्रारम्भिक समय के मानवीय इतिहास के भ्रमणों/यात्राओं के समान नहीं है। यहूदियों की भाषा में शब्द "तोरह्" का अर्थ अध्ययन करना या खोज करना है। "टुअर" उसमें से निकाला प्रतीत होता है। लैटिन में मूल शब्द "टोरनोस" उसके समीपस्थ है। 'टोरनोस' एक प्रकार के गोल पहिये जैसा उपकरण था जो भ्रमण परिधि या पैकेज टुअर के विचार की ओर संकेत करता है। संस्कृत में "पर्यटन" का अर्थ आराम के लिए और ज्ञान पाने के लिए यात्रा करने के उद्देश्य से अपने निवास स्थान को छोड़ना है। देशाटन अन्य शब्द है जिसका अर्थ आर्थिक लाभों के लिए भ्रमण करना है। तीर्थाटन तीसरा समतुल्य शब्द है जिसका अर्थ धार्मिक उद्देश्यों के लिए यात्रा करना है। तीनों शब्द पर्यटन के अर्थ और अवधारणा को ज्यादा अधिक उपयुक्त ढंग से प्रेषित करते हैं।

भारत, 1970 से, युनाइटेड नेशन्स ट्रेवल एण्ड टुअरिज्म पेपर (लेख) में दी गई निम्नलिखित परिभाषा के आधार पर पर्यटक कार्यालय से पर्यटन सम्बद्धित सांख्यकीय जानकारी एकत्रित कर रहा है। यह परिभाषा है: "कोई व्यक्ति, जो विदेशी पासपोर्ट पर भारत में 24 घण्टे की न्यूनतम अवधि और 6 महीने की अधिकतम अवधि के लिये भ्रमण करता है, पर्यटक है बशर्ते कि वो इस देश में न तो बसता है और न नौकरी के लिये नियुक्त होता है।" यह अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों पर लागू होता है।

पर्यटन एक आधुनिक शब्द है। यह अंतर्राष्ट्रीय और देशीय दोनों पर्यटकों पर लागू होता है। यह कार्य और निवास के उनके सामान्य स्थान से बाहर, गतव्यों तक लोगों की अस्थायी गति है। आनन्द की चेष्टा वाले ऐसे पर्यटक भ्रमणकर्ता है और एक से दूसरे स्थान पर या एक स्थान पर ही बार–बार उसके दर्शनार्थ आते हैं। वे सब आर्थिक गतिविधियाँ जो बार–बार आयोजित की जाती हैं पर्यटन का ही हिस्सा बनाती है। छुट्टियाँ बिताने के लिए भ्रमण, व्यापारिक या व्यावसायिक दौरा पर्यटन का ही भाग बन जाता है बशर्ते कि वह अस्थायी हो और जीवन निर्वाह के लिये कमाई करने के उद्देश्य के बिना, इच्छा से भ्रमण किया गया हो। व्यापार या व्यावसायिक पर्यटन का सरोकार विभिन्न पक्षों के बीच सहयोग की चेष्टा के लिये विचारों का आदान–प्रदान करने के लिये होता है। आज का युग भू–मण्डलीय अर्थव्यवस्था के भविष्य सम्बन्धी आर्थिक सुधारों का है। यह ज्यादा से ज्यादा पर्यटकों को हमारे महानगरों और उद्योग व वाणिज्य के बढ़ते हुए अन्य केन्द्रों में ला रहा है।

शब्द "होलीडे" शब्द होलि डे (पावन दिन) से निकला है। इसका कारण यह है कि लम्बे

टिप्पणी

समय तक यह धार्मिक अनुष्ठानों के दिन से ही संबंधित किया जाता था। 19वीं शताब्दी तक, राज्य की धर्म निरपेक्ष गतिविधियों को देखते हुए कुछ और दिन छुट्टी के लिये नियत किए गए थे।

वार्षिक छुट्टियों की अवधारणा जो कि एक नागरिक को मिलती या उसके द्वारा ली जाती है, का पर्यटन के साथ सहसम्बन्ध बहुत आधुनिक घटना है।

- "पर्यटन" का अर्थ, हिब्रू, लैटिन व संस्कृति में इसके लिये उपयोग किये जाने वाले सांकेतिक शब्दों में अव्यक्त रूप से पाए गये हैं।
- पर्यटन, लोगों की अस्थायी और ऐच्छिक गति मुख्य रूप से छुट्टियां बिताने, आनन्द पाने या व्यापारिक सहयोग के लिये गति को बताता है।

30.2 प्रारम्भिक भ्रमण से आधुनिक पर्यटन तक प्रगति

कौतुक के रूप में पर्यटन ने इतिहास में आदि काल से मानव को एक या अनेक तरह से आर्कषित किया है। भारतीय ऋषि ध्यान लगाने के लिये हिमालय, समुद्र तटों, प्राकृतिक स्थलों या झील के किनारे और वनों के समीप तक भ्रमण करते थे। तब से सब धर्मो के लोग भारत के हर कोने में स्थापित पवित्र स्मारकों को देखने के लिये जा रहे हैं।

हमें नये स्थानों को खोजने और पर्यावरण में बदलाव पाने की दृष्टि से यात्रा करने के भी उदाहरण मिलते हैं। इस तरह की यात्राएं, अब आधुनिक पर्यटन द्वारा प्रदान सुविधाओं की अनुपस्थिति में की जाती थी। उस समय, न तो सुस्पष्ट मार्ग थे, न ही किसी प्रकार के मानचित्र, न ही इन मार्गों पर सुरक्षा के कोई उपाय उपलब्ध थे। फिर भी अन्वेषणों ने सभ्यता की धीमी वृद्धि और मानव के आवास स्थल बारे में ज्ञान की वृद्धि में योगदान दिया है।

कुछ भारतीय अन्वेषकों की जोखिमपूर्ण यात्राओं की एक रुचिकर गाथा है, जो 19वीं शताब्दी के मध्य में तिब्बत और समीपवर्ती स्थानों की यात्रा पर गए थे। उन दिनों में मानचित्र में तिब्बत को विशाल सफेद खाली स्थान के रूप में दिखाया जाता था, क्योंकि वह बर्फ से ढ़का था। उसके मूल शासक शंकालु और उग्र थे। वे विदेशियों को दूरस्थ प्रदेशों में प्रवेश नहीं करने देते थे। इसके दूसरी ओर भारतीय सर्वेक्षण के ब्रिटिश अधिकारियों को प्रदेश के कस्बों, पर्वतों, नदियों, सड़कों और पहाड़ियों के बीच दर्रे की कोई जानकारी नहीं थी, और यह उन दिनों की भारतीय राजधानी, कलकत्ता के उत्तर में केवल 500 कि.मी. की दूरी पर था। ब्रिटिश सरकार को जानकारी चाहिये थी ताकि वो उत्तरी सीमाओं की सुरक्षा कर सके। मोहम्मद हनीफ जो भारतीय सर्वेक्षण में युवा क्लर्क था, नैन सिंह, मनी सिंह और किशन सिंह जो 30 से 40 के बीच की आयु के थे और बहुत से अन्य युवाओं को इन क्षेत्रों में जाने के लिये चुना गया था। सिंह भाई लोगों को "पंडित" का कोड नाम दिया गया था ताकि वो बौद्ध तीर्थ यात्री या व्यापारी

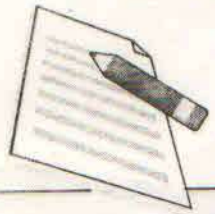

टिप्पणी

बन कर, गुप्त रूप से, मूल्यवान जानकारी इकट्ठा कर सकें। क्योंकि वे भारतीय–तिब्बत सीमा के निकटवर्ती स्थान के निवासी थे, उनको यह फायदा था कि वे तिब्बती दिखाई पड़ते थे। इन लोगों ने जो सफ़र किया वह क्षेत्रों के रमणीय सौन्दर्य का आनन्द उठाने के लिये नहीं था।

मो. हमीद 1863 में लद्दाख से गया था, वो यारकंद पहुंचा और छः महीने वहां पर रहा था। उसने अपनी जान जोखिम में डालते हुए भी आवश्यक जानकारी अंकित की। वापस आते समय, काराकोरम पर्वतों में बीमारी और थकावट से उसकी मृत्यु हो गई। उसकी यात्रा के लेख बहुत उपयोगी साबित हुए थे।

किशन सिंह, जिसका कोड नाम 'ए.के.' था, ने 1870 के वर्ष में, इस प्रदेश को पार किया और पुनः पार कर एवेस्ट की ओर गया और गोबी मरुस्थल को पार कर लोप नोर झील पहुंचा। यह मरुस्थल हिमालय के पार 4500 कि.मी. पर था। कोई चार वर्षो के बाद, यह बहादुर "यात्री पर्यटक", इस अमूल्य जानकारी के साथ दार्जिलिंग के रास्ते वापस आ सका।

इन बहादुर अन्वेषकों की यात्राएं कितनी जोखिम भरी थीं। जोखिमों की एक वीर गाथा। यह महान उद्देश्य के प्रति अर्पित व्यक्तियों की संस्कृति थी। आज यात्रा व्यापारियों, आनन्द मनाने वालों और लीव ट्रेवल कनसेशन टिकट वालों के लिए रह गई है।

30.3 पर्यटन के प्रकार

पर्यटन और पर्यटक के विभिन्न प्रकार है। यह रहने की अवधि, परिवहन के प्रकार, तय की गई दूरी, दौरे का उद्देश्य और पर्यटकों द्वारा अदा की गई कीमत के आधार पर कई भिन्न प्रकार के होते हैं।

यहां हम चार प्राथमिक प्रकार के पर्यटनों के बारे में चर्चा करेंगे। अंतर्राष्ट्रीय और स्वदेशीय पर्यटन, लम्बी और थोड़ी दूरी के पर्यटन सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रकार हैं। एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक कई देशों की सीमाओं को पार करता है, भिन्न मुद्राओं का इस्तेमाल करता है और भिन्न भाषाओं से उसका सामना होता है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के लिए अधिक बड़े देशों में अधिक आर्कषण हो सकता है। यह बताना सरल है कि इस प्रकार के पर्यटन में ज्यादा लम्बी दूरियां तय करनी होंगी। फिर भी छोटे आकार के देशों जैसे नीदरलैंड, बांग्लादेश, नेपाल या श्रीलंका के लिये पड़ोसी देशों में पहुँचने के लिए बहुत कम दूरियां हैं।

दूसरी ओर, स्वदेशीय पर्यटन का सम्बन्ध अपने देश के अन्दर यात्रा करने से होता है। इसमें पासपोर्ट बनवाने और वीसा या एक मुद्रा का दूसरी में रूपान्तर करवाने की समस्या का सामना नहीं करना पड़ता है। इसके विस्तार की गुंजाइश सामान्यतः बड़े आकार के देश, जैसे भारत जहां लोगों के रहन–सहन का स्तर ऊंचा हो रहा है, में ज्यादा होती है। इन दो प्रकारों के बीच अन्तर कम हो रहा है क्योंकि देशों के बीच

टिप्पणी

ज्यादा सरलता से गतिविधियां होने लगी हैं। यूरोप में बड़ी संख्या के देश अब 'यूरोपियन संघ' नामक समूह में शामिल हो गए हैं। अतः जनवरी 1993 से, उसके सदस्य राष्ट्रों के नागरिकों की समस्त यात्राएं घरेलू स्वदेशी वर्ग में आ गई हैं। मित्र राष्ट्रों, जैसे अमेरिका और कनाड़ा, के बीच बन्धनों का कम होना भी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिये इस अन्तर को कम कर देगा। पाकिस्तान और भारत के मामले में भी, यात्रा प्रारम्भिक वर्षों की तुलना में अब ज्यादा आसान हो रही है। भारत और नेपाल के बीच यात्रा इन रुकावटों से सामान्यतः मुक्त रही है।

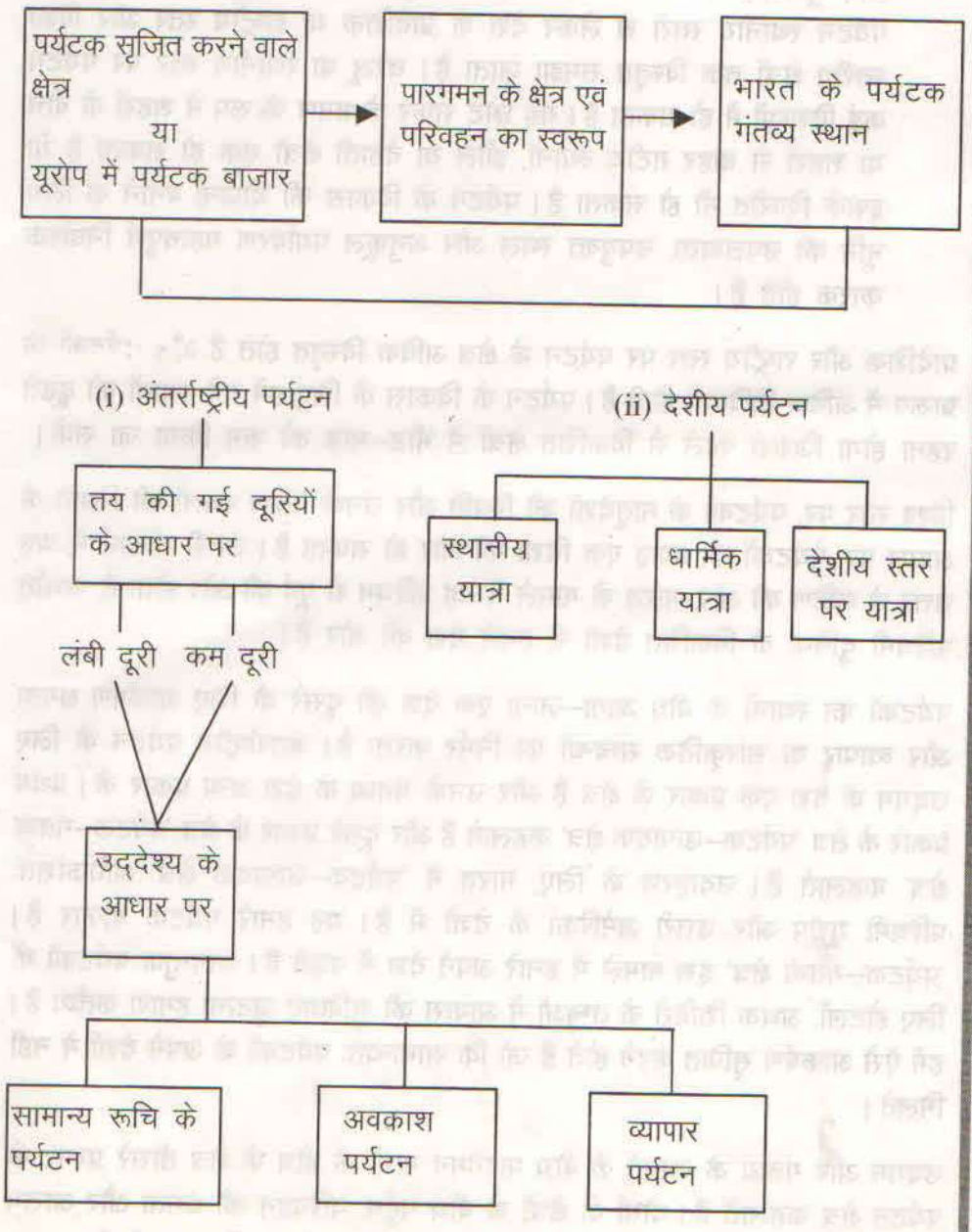

चित्र 30.1 पर्यटन क्षेत्रों के प्रकार और पर्यटन के प्रकार

टिप्पणी

दूरी के आधार पर, पर्यटन के दो प्रकार है–

(क) लम्बी दूरी के पर्यटन सामान्यतः 3000 कि.मी. से अधिक की यात्राएं शामिल की जाती हैं।

(ख) कम दूरी के पर्यटन की सीमा इससे कम होती हैं।

विमान सेवाओं के प्रबंध और विपणन सुविधाएं प्रदान करने के लिए यह बात ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। बड़े पैमाने पर पर्यटन विकास के लिए पर्यटकों के लिए सुविधाएं भी उतने ही बड़े पैमाने पर जुटानी होती हैं। भौगोलिक दृष्टि से पर्यटन स्थानीय स्तरों से लेकर देश के प्रादेशिक या राष्ट्रीय स्तर और विश्व स्तरीय क्षेत्रों तक विस्तृत समझा जाता है। घरेलू या स्थानीय स्तर पर पर्यटन कई दिशाओं में हो सकता है। यह छोटे सफर के भ्रमण के रूप में शहरों के बीच या शहरों से बाहर तटीय स्थानों, झील या देहाती क्षेत्रों तक हो सकता है या इसके विपरीत भी हो सकता है। पर्यटन के विकास की योजना बनाने के लिये भूमि की उपलब्धता, उपयुक्त स्थल और अनुकूल पर्यावरण महत्वपूर्ण निर्धारक कारक होते हैं।

प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन के क्षेत्र अधिक विस्तृत होते हैं और पर्यटकों के प्रारूप में अधिक विविधता होती है। पर्यटन के विकास के लिए हमें नये स्थानों को ढूढ़ते रहना होगा जिससे पहले से विकसित क्षेत्रों में भीड़–भाड़ को कम किया जा सके।

विश्व स्तर पर, पर्यटकों के मातृदेशों की स्थिति और उनके गंतव्य स्थलों की स्थिति के आधार पर, पर्यटकों का प्रवाह एक दिशा की ओर हो सकता है। उत्तरी गोलार्ध में, यह उत्तर से दक्षिण की ओर, भारत के मामले में यह पश्चिम से पूर्व की ओर होता है, अर्थात् पश्चिमी दुनियां के विकसित देशों से हमारे देश की ओर है।

पर्यटकों का स्थानों के बीच आना–जाना एक देश की दूसरे के लिए आर्कषण क्षमता और व्यापार या सांस्कृतिक सम्बन्धों पर निर्भर करता है। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के लिए उद्गम के देश एक प्रकार के क्षेत्र है और उनके गंतव्य के देश अन्य प्रकार के। प्रथम प्रकार के क्षेत्र 'पर्यटक–उत्पादक क्षेत्र' कहलाते हैं और दूसरे प्रकार के क्षेत्र 'पर्यटक–गंतव्य क्षेत्र' कहलाते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में 'पर्यटक–उत्पादक क्षेत्र' अधिकांशतः पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के देशों में है। यह हमारे पर्यटक बाजार है। 'पर्यटक–गंतव्य क्षेत्र' इस मामले में हमारे अपने देश में पड़ते हैं। आगन्तुक पर्यटकों के लिए होटलों, अथवा शिविरों के तम्बुओं में आवास की सुविधाएं जुटाना हमारा कर्तव्य है। हमें ऐसे आकर्षण सृजित करने होते हैं जो कि सामान्यतः पर्यटकों के अपने देशों में नहीं मिलते।

उदगम और गंतव्य के स्थानों के बीच पारगमन मार्गों के बीच के क्षेत्र तीसरे प्रकार के पर्यटन क्षेत्र कहलाते हैं। दोनों के क्षेत्रों के बीच पहुँच, परिवहन की क्षमता और आराम इत्यादि पर्यटकों के आने–जाने की दिशा और आकार को प्रभावित करती है।

टिप्पणी

पर्यटकों के भ्रमण के उद्देश्य या प्रयोजन के आधार पर, तीन प्रकार के पर्यटन हैं—(अ) एक समान रुचि के पर्यटन, (ब) अवकाश पर्यटन, और (स) व्यापारिक पर्यटन। प्रथम मामले में, पर्यटक अतिथि तथा पर्यटन स्थल के निवासी अतिथेय का उद्देश्य एक ही होते हैं। इस प्रकार में, यात्रा करने वाले मित्र या रिश्तेदार गंतव्य स्थल पर पर्यटक सुविधाओं की व्यवस्था पर बहुत निम्न दबाव डालते है। आवकाश पर्यटन सर्वाधिक लोकप्रिय है। इस वर्ग के अंतर्गत आने वाले पर्यटक सैर–सपाटे, यात्रा, मनोरंजन और भिन्न सांस्कृतिक स्थलों को जानने के लिए अच्छा मौसम पाने को उत्सुक रहते हैं। व्यापारी पर्यटक वाणिज्य और पेशों से सम्बन्धित व्यापार मेलों तथा कान्फ्रेंसों में भाग लेने के लिए यात्रा करते हैं। फिर भी, वे उन्हीं सुविधाओं, जो कि अवकाश पर्यटकों को प्रदान की जाती हैं, का उपयोग मनोरंजन के लिए करते हैं।

- पर्यटन को भिन्न आधारों पर कई प्रकारों और उप–प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है।
- ठहरने की अवधि, प्रयुक्त परिवहन साधन, यात्रा का उद्देश्य और पर्यटकों द्वारा चुकाई कीमत को वर्गीकरण के मानदण्ड के रूप में अपनाया गया है।

पाठगत प्रश्न 30.1

1. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कोष्ठक में दिये गए शब्दो में से सही शब्द चुनकर कीजिए–

   (क) अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक किसी अन्य देश में एक _____ प्रवासी होता है। (अस्थायी/स्थायी)

   (ख) आधुनिक पर्यटन स्वेच्छा से की गई यात्रा है, _____ वर्ग के व्यक्ति को भ्रमण करने की स्वतंत्रता हो सकती है। (अमीर/किसी भी)

   (ग) पर्यटक जनक देश पर्यटन के लिए _____ है। (गंतव्य क्षेत्र/बाजार)

   (घ) यूरोपियन देश के एक विशेष समूह के बीच यूरोपवासियों की यात्रा को अब _____ समझा जाता है। (देशी/अंतर्राष्ट्रीय)

2. पर्यटन को उसके भिन्न रूपों में वर्गीकृत करने के लिए पांच आधारों को चिन्हित करें :

   (क) _____ (ख) _____

   (ग) _____ (घ) _____

   (ङ) _____

टिप्पणी

यदि हम दो अलग–अलग क्षेत्रों के वर्गों को इस प्रकार दिखाते हैं कि एक क्षेत्र बड़ा हो और दूसरा छोटा तो उनके वृत्तों का आकार उनके क्षेत्रफल के अनुपात में होगा। उदाहरण के लिये यदि उत्तर प्रदेश और हरियाणा के भूमि उपयोग दिखाना है तो वृत्तों के आकार राज्यों के क्षेत्रफलों के अनुपात में होंगे। इसके बाद प्रत्येक राज्य के विभिन्न भूमि उपयोगों को दिखाने की विधि जैसी ही होगी। इनमें एक वृत्तारेख बड़ा होगा और दूसरा छोटा। इनके वृत्त खंड दोनों राज्यों के आनुपातिक भूमि उपयोग दिखायेंगे।

वृत्तारेख की विशेषताएँ

(i) यह किसी परिघटना के आनुपातिक संघटन को दिखाने का बेहतर ढंग है; क्योंकि यह आरेख द्विविम स्थान घेरता है, जबकि दंड केवल ऊँचाई या लम्बाई दर्शाते हैं।

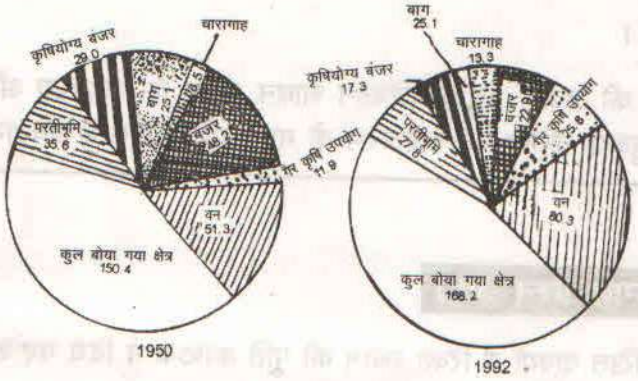

चित्र 5.6 वृत्तारेख

(ii) जब घटकों की संख्या ज्यादा होती है तो उन्हें मिश्रित दंड या बहु दंडों द्वारा दिखाना कठिन होता है। ऐसी परिस्थिति में वृत्तारेख बहुत ही उपयुक्त होता है।

(iii) दंड आरेख की तुलना में वृत्तारेख कम जगह घेरता है।

(iv) इसमें गणितीय गुणा–भाग अधिक करना पड़ता है।

(v) जब थोड़ी सी इकाइयों, क्षेत्रों, राज्यों के उपवर्गों की तुलना करनी हो तो यह आरेख प्रभावी होता है। जब बहुत अधिक इकाइयों की तुलना करनी होती है तो वृत्तारेख के स्थान पर बहुदंड आरेख चुना जाता है।

(घ) तारा आरेख

इस आरेख में केन्द्र से अरीय रेखायें खींची जाती हैं जो किसी मात्रा या दिनों की संख्या का निरूपण करती हैं। अरीय रेखाओं की लम्बाई उनके द्वारा निरूपित की जाने वाली मात्रा या दिनों की संख्या के अनुपात में होती है। जब रेखाओं के बाहरी बिन्दुओं को एक दूसरे से मिला दिया जाता है तो इससे बनी आकृति तारे के समान होती है। इसीलिये इस आरेख को तारा आरेख कहा जाता है। पवनारेख तारा आरेख का एक विशिष्ट उदाहरण है।

टिप्पणी

उदाहरण

नीचे दिये आंकड़ों का निरूपण तारा आरेख द्वारा करिये।

सारणी 5.14

पवन की दिशा	दिनों की संख्या	पवन की दिशा	दिनों की संख्या
उत्तर (उ.)	51	दक्षिण–पश्चिम (द.प.)	57
		पश्चिम (प.)	32
उत्तर–पूर्व (उ.पू.)	22	उत्तर–पश्चिम (उ.प.)	52
पूर्व (पू.)	17	शांत दिन	37
दक्षिण–पूर्व (द.पू.)	42	योग	365
दक्षिण (द.)	55		

तारा आरेख की रचना

तारा आरेख की रचना में निम्नलिखित चरण शामिल हैं:

(i) पवन के बहने की दिशायें आठ हैं। अतः केन्द्र से 45° के अन्तराल पर हम आठ अरीय रेखायें, खींचते हैं जो पवन की आठ दिशाओं को बताती हैं।

(ii) अब इन रेखाओं पर उ., उ.पू., पू., द.पू., द., द.प., प. और उ.प. क्रमशः लिखा जाता है।

(iii) प्रत्येक रेखा की लम्बाई दिनों की संख्या बतायेगी जिनमें पवन प्रत्येक दिशा से बहती है। इसके लिये कागज के आकार को ध्यान में रखकर हम उपयुक्त पैमाना चुनते हैं। यहाँ पैमाना है: 1 सेमी = 20 दिन।

इस पैमाने के आधार पर प्रत्येक दिशा की रेखा की लम्बाई निम्नलिखित होगी:

उ. = 2.55 सेमी.	द.पू. = 2.1 सेमी.	प. = 1.6 सेमी.
उ.पू. = 1.1 सेमी.	द. = 2.75 सेमी.	उ.प. = 2.6 सेमी.
पू. = 0.85 सेमी.	द.प. = 2.85 सेमी.	शान्त = 1.85 सेमी.

(iv) ऊपर दी गई लम्बाई के अनुसार केन्द्र से प्रत्येक दिशा की रेखा खींचिए। शान्त दिनों के लिये केन्द्र पर 1.85 सेमी की त्रिज्या लेकर वृत्त बनाइये।

(v) सभी रेखाओं के सिरे बिन्दुओं को मिलाने से तारा आरेख बन जायेगा।

(vi) केन्द्र पर बनाये गये वृत्त के भीतर शांत दिनों की संख्या लिखी जाती है। इस प्रकार के बने तारा आरेख द्वारा पवन की दिशा दर्शाई जाती है।

टिप्पणी

ने शिमला नगर के मुख्य अस्पताल (ऊँचाई 2000 मीटर) का नाम अपने देश की सबसे ऊँची हिमाच्छादित चोटी के नाम पर रखा जिसकी ऊँचाई मात्र 1085 मीटर है।

भू–आकृति की विभिन्न विशेषताओं के सम्बन्ध में पर्यटकों की पसन्द को जानना शायद रूचिकर होगा। ब्रिटेन में किया गया एक छोटा सा अध्ययन दर्शाता है कि अधिकांश पर्यटकों को पर्वत अधिक पसंद हैं और निम्नभूमियों को सबसे कम पसंद किया जाता है। पर्वतों और उच्च स्थलाकृतियों पर खड़े होकर छोटे दृश्य दिख पाते हैं, जैसे गहरी घाटियों, ऊंची चोटियों, तीव्र ढाल वाले पर्वतों और कगारों के मनोहारी दृश्यों का आनंद लिया जा सकता है। मैदानों और पठारों की सपाट और तरंगित भूमि दूर–दूर तक एक जैसी दिखाई पड़ती है। निम्नलिखित सारणी दर्शाती है कि पसंद ऊँची स्थलाकृतियों से निम्नस्थलाकृतियों की ओर अवरोही क्रम में है। यह ब्रिटेन में एक्सटर विश्वविद्यालय के शोधकर्ता, ए. ग्लिग की प्रोजेक्ट रिपोर्ट पर आधारित है।

सारणी क्र. 30.1: पर्यटकों की विभिन्न स्थलाकृतियों के लिए पसन्द

भू-आकृति	पर्यटकों की पसन्द	श्रेणी
पर्वत	75	1
ऊँची पहाड़ियां	61	2
पहाड़ी क्षेत्र	53	3
पठारी उच्च भूमि	47	4
उच्च भूमि	46	5
निम्न भूमि	37	6

पठार और मैदान अपने सपाट भू–भाग के कारण कम सुरम्य एवं सुन्दर समझे जाते हैं। परन्तु समुद्र और समुद्र के किनारे की सपाट भूमि, पर्यटकों के आवास के लिये इमारतों के निर्माण की वजह से मूल्यवान होती है। अन्तःस्थलीय जलाशय पर्यटकों के आकर्षण केन्द्र होते हैं अतः झीलों, जलाशयों, नदियों, नहरों और जलप्रपातों की निकटवर्ती समतल भूमि का मूल्य अधिक हो जाता है।

पर्वतों तथा अधिक ऊँचे चट्टानी भागों में वन्य भू–दृश्य अधिक आर्कषक बन जाते हैं। किसी भी तरह की भूमि को उपजाऊ बना कर प्राकृतिक सौंदर्य भी उतना ही मनोहर बनाया जा सकता है। यही कारण है कि प्रकृति और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण के लिए बने अंतर्राष्ट्रीय संघ ने राष्ट्रीय पार्कों, जीव मंडल, आरिक्षत भूमि इत्यादि में प्राकृतिक दृश्य भूमियों को अलग कर रख दिया है, जिनका उपयोगी पर्यटन के अलावा किसी काम में नहीं लाया जा सकता। वन्य जीवन को चिड़ियाघर या राष्ट्रीय पार्क में न देखकर, उनके प्राकृतिक आवास में देखना आजकल प्रकृति पर्यटन कहा जाता है।

टिप्पणी

निर्जन क्षेत्रों की वनस्पति और पशु जो उस पर आश्रित रहते हैं, पर्यटन भू–दृश्य का एक अन्य महत्वपूर्ण तत्व है। यद्यपि वन मुख्य क्षेत्र हैं जहाँ जैव विविधता संरक्षित है, परन्तु घास भूमि, कृषि क्षेत्र, आर्द्र भूमि, ऊसर भूमि, मरुस्थल, ताजे और लवण युक्त जल की झीलें भी उसे सुरक्षा प्रदान करती हैं।

आर्द्र भूमि अब ऊसर भूमि नहीं समझी जाती है। यद्यपि आर्द्रभूमि शुष्क भूमि और जलाशयों के बीच परिवर्ती क्षेत्र होता है फिर भी इनमें विभिन्न प्रकार के वन्य प्राणियों के आवास शामिल हैं। ऐसे क्षेत्र नदियों, बाढ़ के मैदानों और बरसाती झीलों से लेकर मैन्ग्रोव, दलदली ज्वार नद मुख तक विस्तृत हैं। इन क्षेत्रों की एक विशेष बात कि यहाँ वर्ष के अधिकतम महीनों में जल की प्रचुरता रहती है। बंगाल के राजसी बाघ सुन्दरवनों की आर्द्रभूमियों में है। मणिपुरी हिरन वहाँ लोक घाटी में स्थित झील के आसपास दलदली भूमि में रहता है। स्तनधारी जीवों के अलावा, विविध प्रकार के जल पक्षी भी आर्द्र भूमि में पाए जाते हैं। इसका एक उदाहरण भरतपुर का घाना पक्षी विहार है। हमारे देश में 5.82 करोड़ हेक्टेयर आर्द्र भूमि है। इसमें नदियां शामिल नहीं है परन्तु धान के खेत और मैन्ग्रोव शामिल हैं।

यदि अपक्षय से बचा लिया जाए तो एशिया में ताजे जल की सबसे बड़ी झील, कोल्लेरु पर्यटकों के लिये उतने ही आर्कषण का स्रोत बन सकती है जितना कि मछुआरों के लिये हैं। कृष्णा और गोदावरी नदियों के डेल्टाओं के बीच स्थित और समुद्र से 32 कि.मी. की दूरी पर, यहां भी पक्षी विहार है।

आर्द्र भूमि के अन्तर्गत प्राकृतिक जलाशय केवल 36% है, शेष मानव निर्मित हैं। अतः यदि मनुष्य असफल हो जाता है, तो आर्द्र भूमि असफल हो जाऐगी और पर्यटक संसाधनों के रूप में उनका आर्कषण गायब हो जायेगा। स्थलाकृतियों और प्राकृतिक वनस्पति के अलावा, पर्यटकों के क्षेत्र में मानव और मानवीय प्रयासों का कोई कम महत्व नहीं है। सीढ़ीदार पहाड़ी किनारे और मैसूर के पास कावेरी नदी के बैराज के समीप सीढ़ीदार बाग, कोलकाता में वानस्पतिक उद्यान, उनके आसपास खेतों व बाड़ों के साथ घास भूमि मानव के सृजन के कुछ उदाहरण हैं। मानव द्वारा प्राकृतिक भू–दृश्य का इस प्रकार से अवशोषण आजकल भूमि उपयोग भू–दृश्य कहलाता है।

- भारत में विभिन्न प्रकार की वृहद और लघु भू–स्थलाकृतियां हैं और समृद्ध जैव विविधता है, जो पर्यटक संसाधनों और पर्यावरण–मैत्रीपूर्ण पर्यटन के विकास के लिये आधार बनाता है।

टिप्पणी

10.	गुड़गाँव	1657669	83
11.	महेन्द्रगढ़	812022	41
12.	भिवानी	1424554	71
13.	हिसार	1536417	77
14.	सिरसा	1111012	56
15.	रिवाड़ी	764727	38
16.	कैथल	845631	47
17.	यमुना नगर	982369	49
18.	फतेहाबाद	806158	40
19.	झज्जर	887392	44
20.	हरियाणा	21082989	

स्रोतः भारत की जनगणना, 2001

बिन्दु मानचित्र की रचना

सर्वप्रथम जिस क्षेत्र का मानचित्र बनाना है उसका आधार मानचित्र और दिखाये जाने वाले आंकड़े उपलब्ध होना चाहिए। फिर जिन प्रशासनिक इकाइयों के आंकड़े उपलब्ध हैं, उन प्रशासनिक इकाइयों की सीमाओं को आधार मानचित्र में पेंन्सिल या हल्की स्याही से अंकित करना चाहिए। ऐसी प्रशासनिक इकाइयों को इकाई–क्षेत्र कहा जाता है और प्रत्येक बिन्दु का मान इकाई–मान कहलाता है। ऊपर दिये गये उदाहरण में जिले इकाई–क्षेत्र हैं और प्रति बिन्दु 20000 लोग इकाई–मान हैं। बिन्दु मानचित्र की रचना निम्नलिखित बातों पर निर्भर करती है:

(i) इकाई–मान का निर्धारण।

(ii) बिन्दुओं का समान और उचित आकार का निर्धारण।

(iii) मानचित्र पर बिन्दुओं को उचित स्थान पर लगाना।

इकाई मान और मानचित्र पर लगाए जाने वाले बिन्दुओं की इकाई मान और मानचित्र पर लगाए जाने वाले बिन्दुओं की ठीक–ठीक संख्या तय हो जाने के बाद मानचित्र के प्रत्येक इकाई क्षेत्र में समान आकार के बिन्दु लगाए जाते हैं।

(i) इकाई मान और बिन्दु के आकार का चयन

इकाई मान द्वारा ज्ञात होता है कि इकाई क्षेत्र में कितने बिन्दु लगाए जाएंगे। इकाई मान को तय करने के लिए सर्वप्रथम यह जानना जरूरी है कि संख्याओं के बीच अंतर कितना है और उसके बाद ही एक बिन्दु का मान निर्धारित किया जाता है। चुना गया

टिप्पणी

इकाई मान हमेशा पूर्णांक होता है। सामान्यतया यह 10 का गुणक होता है। वास्तविक संख्याओं के खंड या अपूर्ण संख्याएं मानचित्र पर निरूपित नहीं की जाती।

चुना गया इकाई मान इतना छोटा नहीं होना चाहिए जिससे अधिक घने क्षेत्रों में बिन्दु लगाने में कठिनाई आए। इसके दूसरी ओर यह इतना बड़ा भी नहीं होना चाहिए कि कम घनत्व वाले क्षेत्र बिल्कुल खाली दिखाई दें और महत्वहीन हो जाएं। प्रयोग करना इसके लिए सबसे अच्छा तरीका है। चित्र 5.8 में दिए बिन्दु मानचित्र में इकाई मान प्रति बिन्दु के लिए 20,000 लोग, लिया गया है।

(ii) मानचित्र में बिन्दु लगाना

जिन आधार मानचित्रों में भौतिक और सांस्कृतिक लक्षण भी दर्शाए होते हैं, उनमें बिन्दु लगाने में बड़ी मदद मिलती है। इनकी मदद से अनुकूल और प्रतिकूल क्षेत्रों का सीमांकन करना आसान होता है। अनुकूल क्षेत्रों में तथ्य की अधिकता होती है और प्रतिकूल क्षेत्रों में उसकी कमी या विरलता। उदाहरण के लिए जनसंख्या वितरण मानचित्रों में प्रतिकूल क्षेत्र गैर–सार्वभौमिकता के लिए जाने जाते हैं अर्थात मरूस्थल, दलदली भूमि, बाढ़ मैदान आदि मानवीय आवास के लिए अनुकूल नहीं है।

बिन्दु लगाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सीमान्त क्षेत्रों को खाली न छोड़ा जाए। यह भी सावधानी रखनी चाहिए कि बिन्दु रेखा या गुच्छ का प्रतिरूप न दर्शाए जो वास्तविकता में नहीं है। चित्र 5.8 में हरियाणा के भौतिक एवं सांस्कृतिक लक्षणों को सावधानीपूर्वक अध्ययन करने के बाद ही जनसंख्या का जिलेवार वितरण देखाने के लिए बिन्दु लगाए गए हैं।

बिन्दु मानचित्र की व्याख्या

बिन्दु मानचित्र में वितरण प्रतिरूप बिन्दु द्वारा दर्शाया जाता है, अतः व्याख्या करने के लिए कोई भी व्यक्ति सैद्धान्तिक रूप में बिन्दुओं को गिनता है और एक बिन्दु के मान से उन कुल बिन्दुओं की संख्या को गुणा करता है। परन्तु सामान्यतया लोग यह जानकारी मूल स्रोत से प्राप्त करके वितरण प्रतिरूप को जानने का प्रयास करते हैं। बिन्दु मानचित्र की व्याख्या करते समय निम्नलिखित सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए:

- सारे क्षेत्र को अधिक घने, मध्यम घने और कम घने क्षेत्रों में बांटना।
- जो क्षेत्र या जिले सामान्य प्रतिरूप में नहीं आते उनकी अपवाद के रूप में अलग से व्याख्या करना।
- यदि आवश्यकता हो तो संबंधित सारणी में दी गई वास्तविक संख्याओं की मदद से व्याख्या को अधिक स्पष्ट करना।

इन सिद्धान्तों को अपनाते हुए चित्र 5.8 में दिए हरियाणा की जनसंख्या के वितरण

टिप्पणी

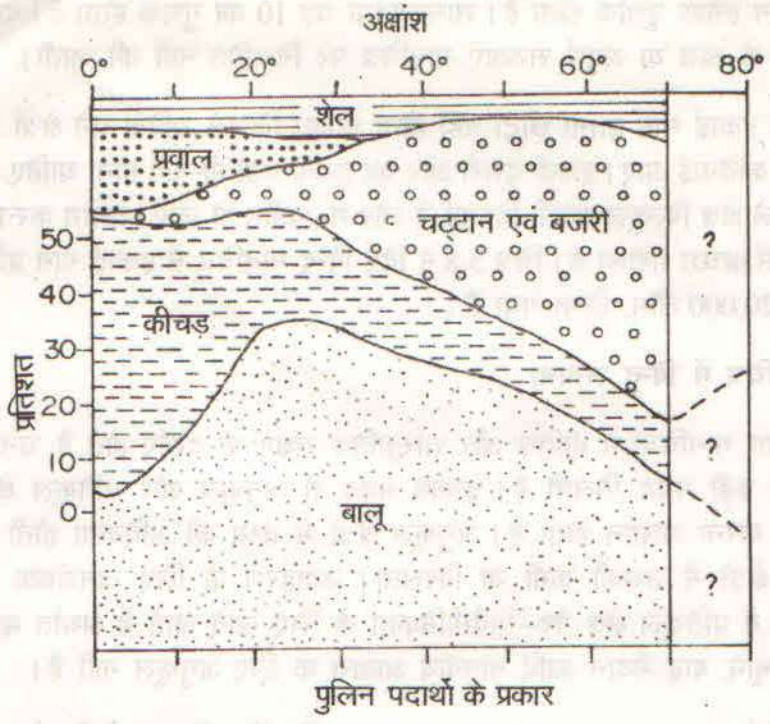

चित्र 30.3 पुलिन सामग्री के प्रकार

पर्यटन के लिये दोनों, भू–दृश्य और समुद्री दृश्य संसाधनों के विकास को सामान्यतया बड़े जनसंख्या के निकटवर्ती स्थानों को पसन्द किया जाता है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए आयोजक पर्वतों, तटवर्ती क्षेत्रों तथा मरूस्थलीय क्षेत्रों में पर्यटन केन्द्रों का विकास करते हैं।

- बालुकामय और प्रवाल पुलिन जो समुद्र के निकट होते हैं तथा ऊँची लहरों और ज्वारीय धाराओं से सुरक्षित होते हैं, पुलिन पर्यटन के विकास में सहायक होते हैं।

30.7 ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संसाधन

इस प्रकार के संसाधनों की सम्पदा कृत्रिम रूप से निर्मित दृश्य भूमि में पाई जाती है। इस प्रकार के पर्यटक संसाधन देश के करीब–करीब प्रत्येक हिस्से में फैले हैं। ये सभी किसी न किसी ऐतिहासिक, धार्मिक या सांस्कृतिक घटना के साथ जुड़े हैं। भारत के बहुत लम्बे ऐतिहासिक काल में लोगों और भिन्न–धर्मो ने स्थूल रूप में निशान छोड़े हैं। इनमें प्रतिमाएं, पूजा स्थल, मकबरें, मीनारें, किलें, महल, प्राचीन स्मारक या हमारी आधुनिक इमारतें शामिल हैं। यह सब ये अपनी वास्तुकला या योजनाबद्ध तरीके से बसाए गए नगरों के खण्डहरों के लिये प्रसिद्ध हैं। बहुत से स्थलों का रंग रूप और आकर्षण नष्ट हो गया है। परन्तु ये किसी ऐतिहासिक या धार्मिक घटनाओं या महापुरूष

टिप्पणी

के जीवन वृत्त से जुड़े होने के साथ कारण अभी भी महत्वपूर्ण हैं। ऐसी परिवर्तनशील बस्तियों के अनेक प्रमाण हैं। जैसे कि 12वीं से 17वीं शताब्दी में 455 वर्षों की अवधि में लगभग इसी क्षेत्र में दिल्ली सात बार उजड़ी और बसी है। इनमें से अन्तिम दो बस्तियाँ पुरानी दिल्ली और नई दिल्ली आज भी सुरक्षित हैं। ऐसे कुछ पुरातन स्थल अब भी बहुत आर्थिक उपयोग के हैं। पर्यटन के जरिये कमाई की जा सकती है। इन सबसे बढ़कर, संगीत, नाटक और नृत्य जैसी अभिनय की कलाएं, परम्पराएं और रीति–रिवाज, वेषभूषा, खाद्य व्यंजन, भाषायें, सामाजिक आदतें, धार्मिक अनुष्ठान और उत्सव आदि संस्कृति की अभिव्यक्तियाँ हैं। औद्योगिक व नियोजित शहर, वैज्ञानिक अधिष्ठापन, नदियों पर बने बांध और अन्य आधुनिक भवन स्वतंत्र भारत के अन्य आकर्षण हैं। पर्यटक संसाधनों की विविधता और अभिगम्यता, परिवहन तन्त्र का जाल सब मिलकर पर्यटन के संसाधनों के विकास की संभावनाओं के अवसर प्रदान करते हैं।

पर्यटन प्राप्त आय और लोगों के लिए उत्पन्न हुए रोजगार के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष स्रोतों, ने हमारे समस्त पर्यटक संसाधनों को अधिक प्रासंगिक बना दिया है।

- भारत के लगभग प्रत्येक भाग में प्राचीन स्मारक या विभिन्न वास्तुकला सम्बन्धी डिजाइनों की इमारतें हैं। ये अपनी प्रदर्शन कलाओं की विविधता और जीवन शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। यह विरासत ही हमारे सांस्कृतिक पर्यटन का संसाधन है।
- विदेशी और व्यापारिक पर्यटकों की निरंतर बढ़ती आय का उपार्जन और स्थानीय लोगों के लिये नौकरियों ने पर्यटन को, स्थानीय और साथ ही साथ राष्ट्रीय स्तरों पर प्रासंगिक बना दिया है।

पाठगत प्रश्न 30.2

1. भारत अमूल्य पर्यटक गंतव्य स्थल क्यों कहलाता है?

2. एशिया की सबसे बड़ी ताजे जल की झील का क्या नाम है और यह कहां स्थित है?

3. किस काल में सात दिल्लियों निर्माण हुआ?

टिप्पणी

30.8 पर्यटन का विकास

पर्यटन को औद्योगिक क्रान्ति से अचानक बहुत प्रोत्साहन मिला है। औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम–स्वरूप सामाजिक और आर्थिक जीवन में बहुत से परिवर्तन आ गए हैं। सामाजिक जीवन ज्यादा धर्मनिरपेक्ष बन गया। धार्मिक उत्सवों से कई मायने में अलग हो गया। धीरे–धीरे संवेतन अबकाश वेतन भोगी कर्मचारियों का अधिकार बन गया। अब वेतनभोगी लोग अवकाश के दिनों को अपनी–अपनी सूची के अनुसार बिताने के लिए पूर्व स्वतंत्र हैं। भारत में भी, एक कर्मचारी एक वर्ष में औसतन 30 दिन का संवेतन अवकाश ले सकता है इस प्रकार के अवकाश की व्यवस्था और रियायतों ने भी मनोरंजन पर्यटन को बढ़ाबा दिया है। स्वेच्छा से घूमने की अधिकाधिक स्वतंत्रता तथा अवकाश के दिनों की संख्या में बढ़ोत्तरी ऐसे निर्धारिक समूह हैं जिन्होनें भारत में भी पर्यटन के विकास के लिये सकारात्मक भूमिका का निर्वाह किया है।

द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व कुछ धनी, अवकाश प्रेमी व्यक्ति ही बाहर जा पाते थे और प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सांस्कृतिक आकर्षणों के स्थान पर रह पाते थे। वर्ष 1945 के बाद स्थिति बदली है। उसके बाद समाज के सभी वर्गों के लोग बड़ी संख्या में अपनी आय के स्तर और रूचि के अनूसार बाहर जाने लगे हैं। ऐसे लोग चाहते हैं कि कम से कम खर्च करके और अधिक समय में अधिक से अधिक स्थानों में घूम सकें। यह स्वाभाविक है क्योंकि मनोरंजन सम्बन्धी भ्रमण के लिये लम्बी मौसमी छुट्टियों का रखना आधुनिक समय में कठिन बनता जा रहा है। ये लोग विश्राम के लिये की गई छुट्टियों का उपयोग साहसिक योजनाओं मनोरंजक खेलों ओर मनोरंजन कार्यक्रमों के लिए भी करते हैं। ऐसे व्यक्ति अकेले या समूह में भ्रमण करना पसन्द कर सकते हैं।

विमान सेवाओं के किरायों में भी यात्रियों के लिए रियायतें, अवकाश यात्रा रियायतें यात्रा रियायतें और निम्न बजट के होटल या तम्बू आवास व्यवस्था आवश्यक प्रोत्साहनों के रूप में उभर कर आए हैं। पिछले दशक से भारत पर्यटन को ऊपर उठाने के प्रति ज्यादा जागरुक हुआ है। इससे पर्यटन की वृद्धि में काफी हद तक मदद मिली है, यद्यपि इसकी गति मंद रही है। विश्व सम्पन्नता और विश्व पर्यटन साथ–साथ चलते हैं। यहीं कारण है कि भारत में विदेशी पर्यटक पश्चिमी दुनियाँ के विकसित और समृद्ध देशों से आते है। उनकी मुद्रा का ज्यादा अधिक मूल्य भारत में उनके भ्रमण की उनके लिये बहुत सस्ता बना देता है। इसके दूसरी ओर, विकासशील देश बहुत निर्धन है, तो वह आनेवाले पर्यटकों के लिये सुख–साधनों और परिवहन सुविधाओं का विस्तार करने में बहुत कम धन राशि व्यय कर पाते हैं।

भारत आर्थिक विकास की दृष्टि से एक विकासशील देश है, उसने तीसरी दुनियाँ विशेषकर अफ्रीका के देशों की तुलना में, पर्यटन का अधिक विकास किया है। इसके दूसरी ओर, दक्षिण–पूर्वी एशियाई देश जैसे कि थाइलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया और फिंलीपाइन्स इस मामले में भारत से बहुत आगे हैं क्योंकि आधुनिक वर्षों में उनकी अर्थव्यवस्था में चारों ओर से वृद्धि हो रही है। अतः व्यक्तिगत स्तर पर उद्देश्य, प्रयोजन,

टिप्पणी

अवकाश की उपलब्धता, छुट्टियां मनाने के लिये शारीरिक शान्ति, आय, शिक्षा, निजी बजट का उपयोग करने की स्वतन्त्रता सभी मिलकर पर्यटन के विकास के लिए कार्य करने है। ये सभी प्रेरक शक्तियां हैं, इसी प्रकार कुछ आकर्षक शक्तियाँ भी है जिनमें प्राकृतिक दृश्य भूमियों का सौंदर्य, सांस्कृतिक स्थल और पर्यटक गंतव्यों पर अनुकूल जलवायु शामिल हैं। जिस प्रदेश या स्थान पर ऐसे विभिन्न पर्यटक संसाधन विद्यमान होते हैं वे पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। जिस देश में जितने अधिक पर्यटन संसाधन होंगे वहाँ उतने ही अधिक पर्यटक खिचे चले आएंगे। इस प्रकार पर्यटन का विकास इन दोनों शक्तियों की अंतर्क्रिया का परिणाम होता है। यदि कोई दो देश, भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक रूप से जितने अधिक नजदीक होते हैं, उनके बीच पर्यटकों का आना जाना उतना अधिक होगा। भारत के साथ व्यापार करने वाले देशों की संख्या बराबर बढ़ रही है। तकनीकी ज्ञान के आदान–प्रदान तथा सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए भी भारत अनेक देशों के साथ सहयोग कर रहा है। इससे पर्यटन को बढ़ावा मिल रहा है।

यद्यपि भारत पूर्व और पश्चिम से आने वाले मार्गों के चौराहे पर स्थित है, लेकिन यह पर्यटक सृजित करने वाले यूरोप और उत्तरी अमेरिका के विकसित देशों से काफी दूर है। संसार के कुल पर्यटकों में केवल 10 प्रतिशत ही ऐसे हैं जो लम्बी दूरी वाले पर्यटन को पसंद करते हैं। परन्तु पहले की तुलना में यह कम खर्चीला और कम समय साध्य बनता जा रहा है। भारत जैसे दूर स्थित विकासशील देशों में उसका हिस्सा बढ़ रहा है यद्यपि अभी भी यह काफी नहीं है।

उच्च जीवन स्तर वाला आधुनिक पर्यटक तीव्र गति और आरामदेय वायुयानों रेलों या सड़क परिवहन के साधनों द्वारा जल्दी यात्रा करना चाहता है। भारत अधिक बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने के बाद ही बड़ी संख्या में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित कर सकेगा। फिर भी, यह हमारे पर्यटन विकास की श्रृंखला में कमजोर कड़ी बना हुआ है।

पर्यटन को प्रोत्साहन देने वाले सकारात्मक कारको के अलावा, नकारात्मक कारक भी हैं जो रुकावटों के रूप में कार्य करते हैं। देश के कुछ हिस्सों में राजनैतिक अस्थिरता, विद्रोह की स्थितियां और आतंकवादियों द्वारा विदेशियों को बन्धक बनाकर रखने की प्रवृति ने पर्यटकों के आगमन को बहुत कम कर दिया है। विशेष रूप से जम्मू एवं कश्मीर और उत्तर पूर्व राज्यों में। कीमतों में तीव्र वृद्धि, परिवहन की लागत और पेट्रोलियम उत्पादों की कमी जैसे संकट भी अक्सर पर्यटन की वृद्धि को हतोत्साहित कर सकते हैं।

वर्तमान समय में, भारत में, मुख्य गतिविधि के रूप में पर्यटन के हमारे सकल घरेलू उत्पाद में 5.3% का योगदान है। कुल समृद्धि (जनसंख्या की प्रति इकाई सकल घरेलू उत्पाद के रूप में मापी गई), राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों के सामान्य स्वरूप पर निर्भर करता है जो पर्यटन की वृद्धि को निर्धारित करती है।

टिप्पणी

- औद्योगिक क्रांति द्वारा आए आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक परिवर्तनों ने भारत सहित विश्वभर में पर्यटन को बढ़ावा दिया है।
- अवकाश के दिनों की संख्या में वृद्धि, अधिक आय, अधिक पर्यटक संसाधनों के विकास पर ध्यान दिया जाना, परिवहन के तीव्रगामी साधनों और अन्य सुख साधनों की व्यवस्था सकारात्मक कारक हैं जिन्होंने व्यापारिक आधुनिक पर्यटन के विकास में योगदान दिया है।
- नकारात्मक कारक भी समय–समय पर देश में पर्यटकों के प्रवाह में रुकावटें डालते रहे हैं।

पाठगत प्रश्न 30.3

1. किन तीन मुख्य कारकों ने स्वदेशी पर्यटन के विकास को बढ़ावा दिया है?

   (क) _____ (ख) _____ (ग) _____

2. नीचे कोष्ठक में दी गई सूची में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए: (मूलभूत सुविधाओं, आकर्षक, प्रेरक)

   (क) भारत में _____ के अपर्याप्त विकास ने पर्यटन के विकास को धीमा कर दिया है।

   (ख) यात्रा पर्यटन _____ और _____ शक्तियों के अंतःक्रिया का परिणाम है।

30.9 पर्यटक स्थलों का वर्गीकरण

पर्यटक स्थानों की भिन्न भौगोलिक प्रदेशों में स्थिति उन स्थलों की भिन्न विशेषताओं, और पर्यटकों के क्रियाकलापों की विविधता के कारण पर्यटक स्थल कई प्रकार के होते हैं। उनके आकर्षणों और सुख साधनों को पर्यटन के आधार के रूप में संक्षिप्त करने के लिए उनका वर्गीकरण किया गया है। फिर भी, कई पर्यटक केन्द्र हैं जिनके बहु–प्रकार्य सम्भव हैं और वो अपने पर्यावरण में कई आकर्षण एक साथ प्रदान करते हैं। ऐसे स्थलों को पर्यटकों के लम्बे समय तक ठहरने का लाभ मिलता है।

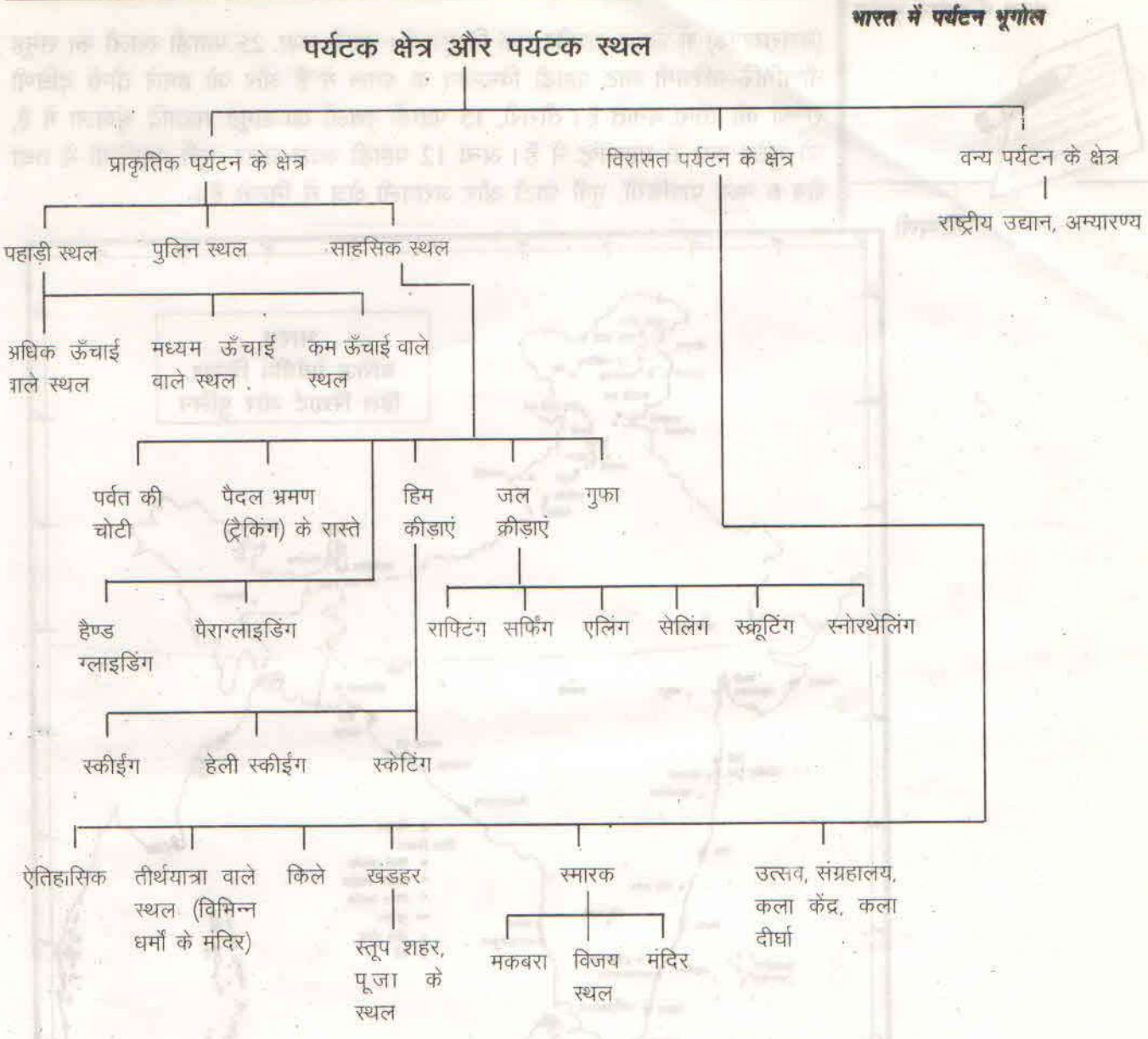

चित्र 30.4 पर्यटक क्षेत्र तथा पर्यटक स्थल

(क) पर्वत और पहाड़ी पर्यटक स्थल

हमें देश के लगभग सभी भागों में ऐसे पर्यटक स्थल मिलते हैं। उत्तर में ऊँचे हिमालय के अलावा, उत्तर पूर्व और दक्षिण में नीलगिरि के आसपास, सतपुडा, अरावली और पश्चिमी घाटों में मध्यम से निम्न ऊँचाई की पर्वतमालाएं हैं और इसके अतिरिक्त अन्य स्थानों पर छोटी–छोटी पहाड़ियाँ भी हैं। इसी कारण उड़ीसा और पंजाब को छोड़कर सभी मैदानी राज्यों में एक या दो सैरगाह बने हुए हैं। स्थिति के अनुसार 100 पहाड़ी स्थलों में से, 42 पहाड़ी स्थलों का सबसे बड़ा समूह पश्चिमी हिमालय में कुमाऊँ

(उत्तराखण्ड) से लेकर कश्मीर तक विस्तृत है। दूसरी बड़ा, 25 पहाड़ी स्थलों का समूह नीलगिरि–पश्चिमी घाट पहाड़ी विभाजन के बगल में हैं और जो हमारे तीनों दक्षिणी राज्यों की सीमा बनाते हैं। तीसरी, 15 पहाड़ी स्थलों का समूह सह्याद्रि श्रृंखला में है, जो मुख्य रूप से महाराष्ट्र में हैं। अन्य 12 पहाड़ी स्थल उत्तर–पूर्वी पहाड़ियों में तथा शेष 6 मध्य पहाड़ियों, पूर्वी घाटों और अरावली क्षेत्र में मिलते हैं।

टिप्पणी

चित्र 30.5 लोकप्रिय पर्वत शिखर, पहाड़ी पर्यटक स्थल तथा पुलिन

इनमें से कुछ पर्यटकस्थल अपेक्षाकृत अधिक विकसित और लोकप्रिय हैं। कइयों में, आनेवाले वर्षों में महत्व अर्जित करने की सामर्थ्य है। इसके अलावा कुछ अन्य हैं जो अविकसित पड़े हैं। हम इन पहाड़ी स्थलों को ऊँचाई के अनुसार तीन मुख्य वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं :

टिप्पणी

(क) कम ऊँचाई वाले पहाड़ी पर्यटक स्थल (पहाड़ी सैरगाह) (समुद्र तल से 800 से 1200 मीटर के मध्य)

(ख) मध्यम ऊँचाई वाले पहाड़ी पर्यटक स्थल (समुद्र तल से 1200 से 2100 मीटर के मध्य)

(स) अधिक ऊँचाई वाले पहाड़ी पर्यटक स्थल (समुद्रतल से 2100 से 3500 मीटर के मध्य)

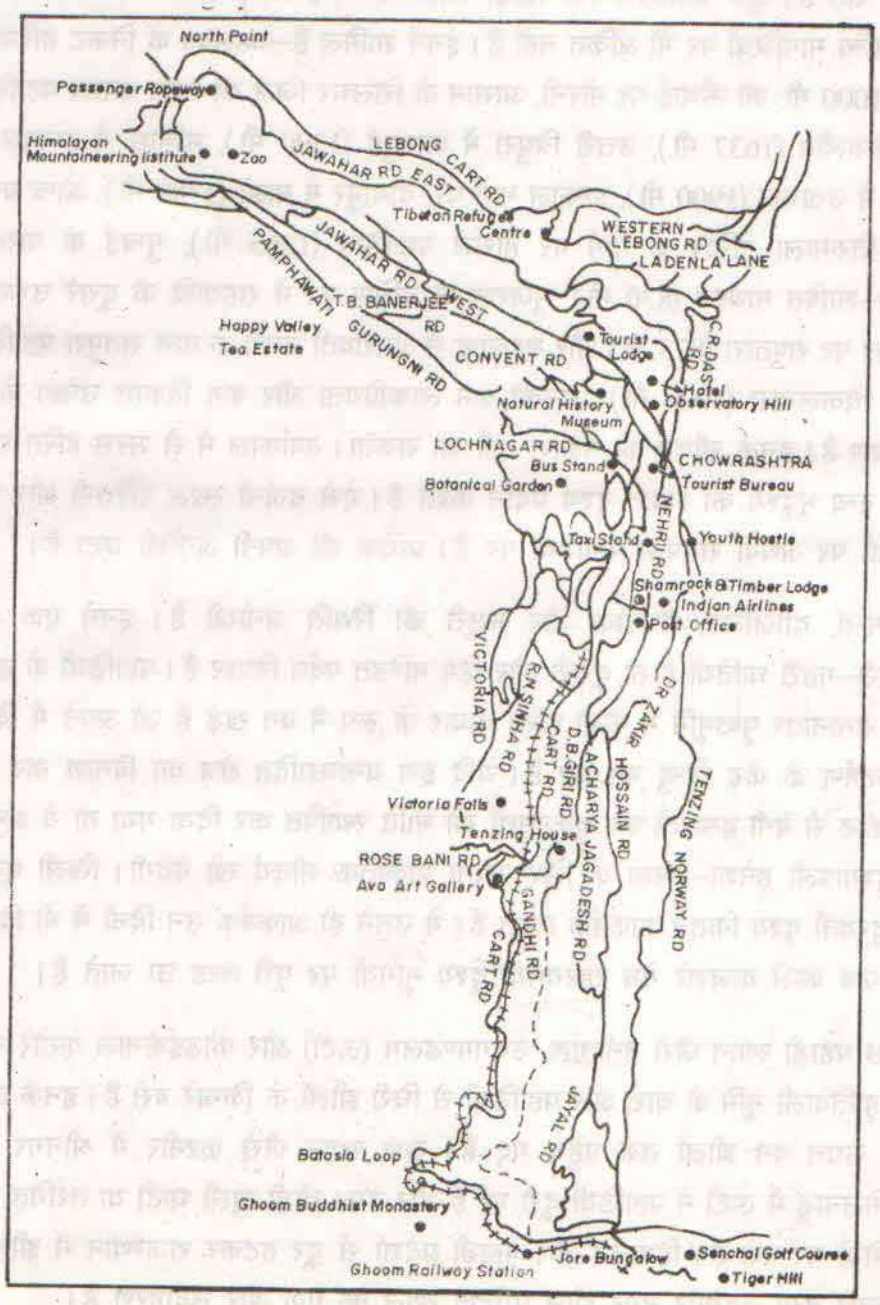

चित्र 30.6 : दार्जिलिंग की कटक पर स्थिति

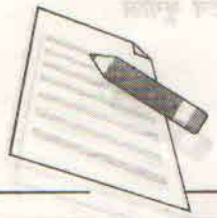

टिप्पणी

दिए गए मानचित्र से स्पष्ट है कि इनमें से अधिकांश मध्यम ऊँचाई वाले, कई निम्न ऊँचाई पर और बहुत कम, बहुत अधिक ऊँचाई वाले पर्यटक स्थल हैं। इनमें से अधिकतर की स्वास्थ्यप्रद जलवायु, सुहानी ग्रीष्म ऋतु, वर्ष भर मानसूनी वर्षा और मृदुल शीतल शीत ऋतु मिलती है। इनमें से कुछ, जो पश्चिमी हिमालय में स्थित हैं, यहाँ शीत काल में हिमपात होता है अथवा कड़ाके की सर्दी पड़ती है। इन स्थलों पर गर्मी के महीनों में जलते गर्म मैदानों से पर्यटक ताप से राहत पाते तथा शीत ऋतु में मनोरंजन कर पाते हैं। कुछ उदाहरण ऐसे पहाड़ी स्थलों के भी हैं जिन्हें लोग कम जानते हैं। ये सामान्य मानचित्रों पर भी अंकित नहीं हैं। इनमें शामिल हैं—कालका के निकट हरियाणा में, 1000 मी. की ऊँचाई पर मोरनी, आसाम के सिलचर जिले की उत्तर कछार पहाड़ियों में हैफलौंग (1637 मी.), उत्तरी त्रिपुरा में जामपुई (1390 मी.), मणिपुर में इम्फाल के पूर्व में उखरुल (1900 मी.), इम्फाल मार्ग पर, दीमापुर में माओ (1788 मी.), आन्ध्र प्रदेश के तिरुमाला मन्दिर के मार्ग पर हौर्सले पहाड़ियां (1265 मी.), मुम्बई के पास में अन–शोषित माथेरन (830 मी.), गुजरात के दक्षिण पूर्व में सह्याद्रि के दूसरे उच्चत्तम पठार पर सपुतारा (873 मी.) और महाराष्ट्र में अमरावती नगरी के पास सतपुरा पहाड़ियों पर चिकलडारा (1000 मी.)। उनकी कम लोकप्रियता और कम विकास उपेक्षा के ही कारण है। इनके सौंदर्य को नकारा नहीं जा सकता। वर्षाकाल में से सरस हरित घाटी या वन्य भूदृश्य का विराट दृश्य प्रदान करते हैं। ऐसे दर्जनों स्थल पश्चिमी और पूर्वी घाटों पर अथवा सतपड़ा पहाड़ियों पर हैं। प्रत्येक की अपनी अनौखी छटा है।

शिमला, दार्जिलिंग, गेंगटोक और मंसूरी की स्थिति अनोखी है। इनमें एक ओर गहरी–गहरी घाटियाँ हैं तो दूसरी ओर हिम मण्डित पर्वत शिखर हैं। पहाड़ियों के ढालों के समानांतर पृष्ठभूमि में फैली हरित दीवार के रूप में वन खड़े हैं जो अपने में विशेष आकर्षण के केंद्र बिन्दु बन गए हैं। यदि इस वनाच्छादित क्षेत्र का विनाश कर वहाँ कंक्रीट से बनी इमारतों को कुकुरमुत्तों की भांति स्थापित कर दिया गया तो ये अनुपम भूदृश्यावली हमेशा–हमेशा के लिए अपना प्राकृतिक सौंदर्य खो बैठेगी। खिली धूप में सुदूरवर्ती दृश्य कितने आकर्षक लगते हैं। ये उतने ही आकर्षक उन दिनों में भी दिखते हैं जब काले कजरारे मेघ रहस्यमयी दृश्य भूमियों पर पूरी तरह छा जाते हैं।

कुछ पहाड़ी स्थान जैसे नैनीताल, उदगमण्डलम (ऊटी) और कोडईकैनाल कटोरे जैसी आकृतिवाली भूमि के चारों ओर पहाड़ियों से घिरी झीलों के किनारे बसे हैं। इनके ढालों के सघन वन झीलों तक पहुँच गए हैं। कुछ स्थान जैसे कश्मीर में श्रीनगर और तमिलनाडु में ऊटी में पहाड़ियाँ दूरी पर हैं और नगर चौड़ी खुली घाटी या तरंगित घास भूमियों पर बसे हैं। हिमालय और पहाड़ी प्रदेशों से दूर हटकर राजस्थान में झील के किनारे बसा उदयपुर नगर झील पर्यटक स्थल का एक और उदाहरण है।

टिप्पणी

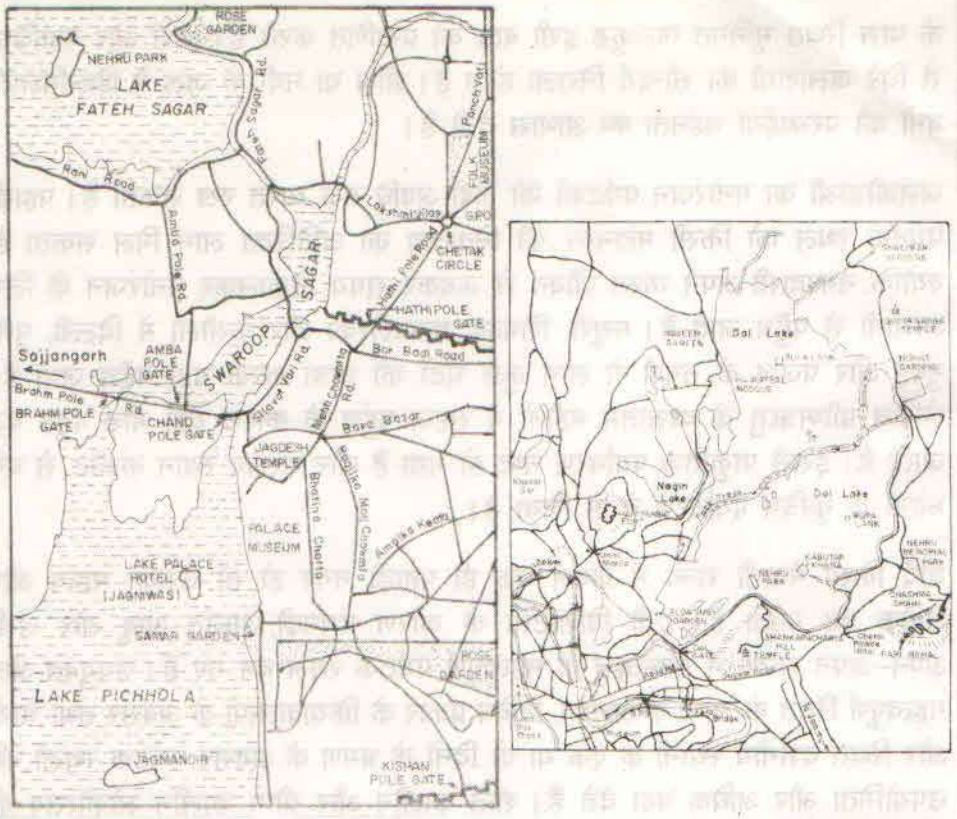

चित्र 30.7 : झील के किनारे बसे पर्यटक स्थल (क) उदयपुर और (ख) श्रीनगर

कुछ पर्यटक स्थल जैसे माउंट आबू, मोरनी, माथेरान, पंचमढ़ी, सपुतार और रांची पहाड़ियों की चौड़ी चोटियों पर या पठार के असमतल धरातल पर बसे हैं, जहाँ से हरी भरी घाटियों के दृश्य या वन्य दृश्य भूमियाँ स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं। शिलांग और डलहौजी ऐसे नगर हैं, जो संकीर्ण घाटियों से विभक्त कुछ पहाड़ियों के समूह पर बसे हैं। हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला, धौलाधार से कांगड़ा घाटी की ओर निकले हुए चौरस चोटी वाले पर्वत स्कंध पर स्थित हैं।

पर्यटक प्रतिदिन कटक के एक छोर से दूसरे छोर तक या पहाड़ियों के चारों ओर बनी सड़कों पर लंबी दूरी की सैर पर निकल जाते हैं। नदी के किनारे स्थित मनाली और पहलगाम की घाटी और पर्वतों की ऊँचाई के लाभ एक साथ मिल जाते हैं। भारत–भूटान सीमा के साथ अरूणाचल प्रदेश में तवांग, जम्मू और कश्मीर राज्य में लेह तथा गुलमर्ग, हिमाचल प्रदेश में केल, शिमला, डलहौजी, ताबू, झांगला, थानेदार तथा मशोलोरा अधिक ऊँचाई वाले पहाड़ी पर्यटक स्थल हैं।

ऊँची पहाड़ी की तुलना में, ऊँची–नीची पहाड़ियों और घाटियों वाले भू–भाग का आकर्षण कुछ अधिक होता है यह जितना अधिक कटा–फटा होगा, पर्यवेक्षक के मस्तिष्क पर उतना ही अधिक नाटकीय प्रभाव पड़ेगा। झील, जलप्रपात, झरने या भूमिगत जलकुंड के रूप में जल की उपस्थिति पर्यटक स्थलों के सौन्दर्य में अभिवृद्धि कर देते हैं। जबलपुर के निकट नर्मदा नदी पर बना धुआँधार जलप्रपात तथा पंचमढ़ी

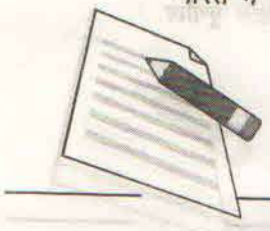

टिप्पणी

के पास स्थित भूमिगत जलकुंड इसी बात को प्रमाणित करते हैं। चारों ओर पहाड़ियों से घिरे जलाशयों का सौन्दर्य निराला होता है। झील या नदी के जल में झिलमिलाती वनों की परछाईयाँ गहनता का आभास देती हैं।

जलक्रीड़ाओं का मनोरंजन पर्यटकों को लंबी अवधि तक व्यस्त रख सकता है। पहाड़ी पर्यटक स्थल को किसी महानगर की निकटता का अतिरिक्त लाभ मिल सकता है: क्योंकि नगरवासी अपने व्यस्त जीवन से ऊबकर समय निकालकर मनोरंजन के लिए आसानी से पहुँच जाते हैं। मसूरी, शिमला, महाबलेश्वर और कसौली में दिल्ली, पुणे, मुंबई और पंजाब के नगरों से लोग कुछ घंटों की यात्रा करके यहां पहुँच जाते हैं। लेकिन ग्रीष्मऋतु के व्यस्ततम महीनों में सहज पहुंच के कारण यहां भीड़ बहुत बढ़ जाती है। इससे प्राकृतिक पर्यावरण नष्ट हो गया है और उसका स्थान कंक्रीट से बने भवनों के कृत्रिम पर्यावरण ने ले लिया है।

यदि किसी मैदानी राज्य में केवल एक ही पहाड़ी नगर हो तो उसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। इसी विशिष्टता के कारण पंचमढ़ी, माउंट आबू ओर राँची अपने–अपने राज्यों में ग्रीष्मऋतु के महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल बन गए हैं। उपयुक्त और महत्वपूर्ण स्थित के लाभों के अलावा, विविध प्रकार के क्रियाकलापों के अवसर तथा चारों ओर स्थित दर्शनीय स्थानों के एक या दो दिनों के भ्रमण के अवसर पर्यटक स्थलों की उपयोगिता और अधिक बढ़ा देते हैं। शीत कालीन और ग्रीष्म कालीन लोकोत्सव के आयोजन स्थानीय हस्त कलाओं, उत्पादों और दुर्लभ पौधों की प्रदर्शनियाँ तथा जनजाति के लोगों की निष्पादन कलाएँ और मेले पर्यटक स्थलो को और अधिक चित्ताकर्षक और लुभावना बना देते हैं। इन आकर्षणों की तुलना प्रसादित सौन्दर्य के आकर्षण से की जाती है, लेकिन नकली आभूषणों का भी तो अपना अलग आकर्षण होता है। त्रिपुरा के छोटे से पहाड़ी पर्यटक स्थल के प्रवेश द्वार पर लगे एक प्रदर्शन पट्ट पर लिखा है – यदि आपने त्रिपुरा के अनन्नासों का स्वाद कभी चख लिया तो आप शिमला के सेबों के लिए कभी भी लालायित नहीं होंगे।

कई पहाड़ी पर्यटक स्थल आस–पास के दर्शनीय स्थलों पर जाने की सुविधा के लिए जाने जाते हैं। ऐसे केन्द्रों से पर्यटक पास पड़ोस में स्थित हिमाच्छादित पर्वत शिखरों, सूर्यास्त और सूर्योदय को देखने के बिन्दुओं, वन्यजीव अभयारण्यों, मन्दिरों या बौद्ध मठों, गुफाओं, चट्टानी भू–भागों, शैल चित्रों या शैलों से बनी मूर्तियों को देखने के लिए सुगमता से जा सकते हैं। आपको यह जानना अच्छा लगेगा कि किस पहाड़ी पर्यटक स्थल का आकर्षण इन्हीं कारणों से और अधिक बढ़ गया है।

(ख) पुलिन पर्यटन

गुजरात में कांधला से लेकर पश्चिम बंगाल में कोलकाता तक भारत की 7000 कि. मी. से अधिक लंबी तट रेखा है। इसमें भारतीय द्वीपों की तटरेखा भी शामिल हैं। इन तटों पर अनेक पुलिन हैं, जिनसे पुलिन पर्यटन का संवर्धन संभव है। गोआ और केरल में

टिप्पणी

कोवलम के मनोहारी पुलिन, पर्यटकों के मन को बहुत भाते हैं। कभी–कभी इन दोनों पुलिनों पर स्वदेशी पर्यटकों की संख्या विदेशी पर्यटकों से बहुत अधिक हो जाती है।

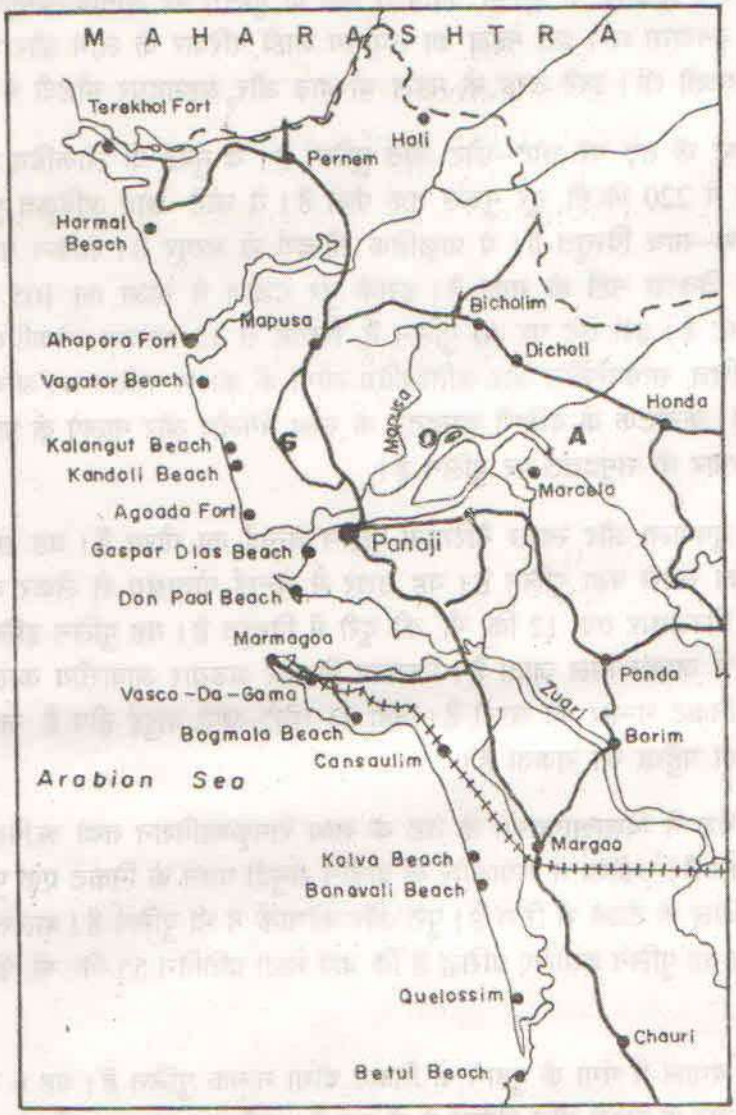

चित्र 30.8 : गोवा पुलिन

कोवलम की लोकप्रियता के दो मुख्य कारण हैं एक तो यहाँ तट के पास समुद्री जल शान्त रहता है दूसरे यहाँ शार्क का कोई भय नहीं। इसके अतिरिक्त तट पर उगे नारियल के कुंज इसे और भी अधिक रमणीक बना देते हैं। जिस सीमा तक धूप स्नान की अनुमति स्पेन, इटली और दक्षिण फ्रांस के तटों पर है, उस सीमा तक तो धूप स्नान कोवलम में निषिद्ध है, फिर भी पर्यटक यहाँ पूर्ण आनंद लेते हैं। यह एक स्वास्थ्य वर्द्धक पर्यटक स्थल है। यहाँ शरीर पर आयुर्वेदिक पद्धति से मालिश करवाने की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। तरंग क्रीड़ा और जल तरण के लिए यहाँ आदर्श परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं। गोआ के पुलिनों का आकर्षण इसलिए अधिक है कि वे काफी लंबी–चौड़े

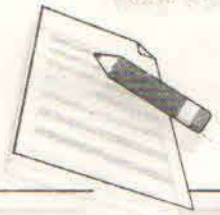

टिप्पणी

और खुले हैं। यहाँ दूर–दूर तक फैली सुनहली रेत धूप में चमचमाती रहती है।

गुजरात के सौराष्ट्र तट पर मीलों लंबे पुलिन है। इसकी सुनहरी रेत भी धूप में चमकती रहती है। जूनागढ़ के भूतपूर्व नवाब ने यहां के पुलिन पर आमोद–प्रमोद के लिए एक महल बनवाया था। इस महल का उपयोग शाही परिवार के लोग और शाही बेगम ही कर सकती थीं। इसी तरह के महल चोरबाढ़ और अहमदपुर माँडवी में भी हैं।

महाराष्ट्र के तट पर छोटे–छोट आठ पुलिन है। ये मुंबई के लोकप्रिय जुहू से लेकर दक्षिण में 220 कि.मी. दूर मुरूड़ तक फैले हैं। ये छोटे–छोटे अविकृत पुलिन पूरे तट के साथ–साथ विस्तृत हैं। ये प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर हैं। लेकिन पर्यटन के लिए इनका विकास नहीं हो सका है। इसके धुर दक्षिण में गोआ का 105 कि. मी. लंबा समुद्रतट है। इस तट पर 40 पुलिन है, जिनमें से 12 अत्यन्त लोकप्रिय हैं। यहाँ के प्रसन्नचित्त, सत्कारशील और अतिथिप्रिय लोगों के कारण पर्यटन का अत्यधिक विकास हुआ है। कर्नाटक के दक्षिणी समुद्रतट के साथ मंगलौर और मालपे के पास तथा उत्तर में कारवार के समुद्रतट पर पुलिन हैं।

खिली धूपवाला और स्वच्छ मैरियाना पुलिन चेन्नई का गौरव है। यह संसार में दूसरे नंबर का सबसे बड़ा पुलिन है। यह उत्तर में चेन्नई पोताश्रय से लेकर दक्षिण में सेंट टामस गिरजाघर तक 12 कि. मी. की दूरी में विस्तृत है। यह पुलिन इलियट के शान्त पुलिन में जाकर मिल जाता है। जिसका विस्तार अडयार आवासीय कालोनी तक हैं। इसके निकट मन्नार की खाड़ी है। जहाँ 21 छोटे–छोटे बलुई द्वीप हैं, जहाँ मुख्य भूमि से सहज़ पहुँचा जा सकता है।

आंध्र प्रदेश में विशाखापतनम के तट के साथ रामकृष्णमिशन तथा ऋषिकौडा नाम के दो पुलिन हैं। उड़ीसा में गोपालपुर के प्राचीन समुद्री पतन के निकट एक पुलिन है। यह पुलिन बालू के टीलों से घिरा है। पुरी और कोणार्क में भी पुलिन हैं। बालसोर के निकट चाँदीपुर का पुलिन इसलिए प्रसिद्ध हैं कि वहाँ भाटा प्रतिदिन 55 कि. मी. पीछे हट जाता है।

पश्चिम बंगाल में गंगा के मुहाने के निकट दीघा नामक पुलिन है। यह 6 कि. मी. लंबा तथा संसार के सबसे चौड़े पुलिनों में से एक है। यहाँ समुद्र उथला और शान्त है। विगत कुछ वर्षों में यहां पाल नौकायन, मत्स्य आखेट और विश्राम के लिए लोकप्रिय हो गया है।

- स्थिति, स्थान और पर्यटकों के मनोरंजन के लिए उपलब्ध साधनों के आधार पर पर्यटक–स्थल अनेक प्रकार के होते हैं।
- पर्वतीय पर्यटक स्थल कटक और पहाड़ियों की विभिन्न ऊँचाइयों पर नदियों के किनारे या झीलों के चारों ओर बसे होते हैं।
- पर्यटन स्थल यदि किसी नगर या किन्हीं अन्य आकर्षण केन्द्रों के निकट है तो पर्यटन के लिए उसका महत्व बढ़ जाता है।

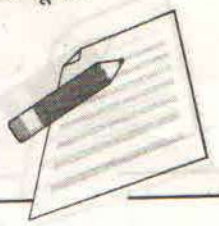

टिप्पणी

- भारत की लंबी समुद्रतट रेखा के साथ–साथ पुलिन पर्यटन की बहुत संभावनाएं हैं।
- केरल और गोआ के पुलिनों को छोड़कर अनेक अभी तक अपेक्षित पड़े हैं।

पाठगत प्रश्न 30.4

1. निम्नलिखित प्रकार के स्थानों पर बने स्वास्थ्यवर्द्धक पर्यटक स्थलों में से एक–एक उदाहरण दीजिए।

   (क) कटक के साथ (हिमाचल प्रदेश में)_____

   (ख) थोड़ी–थोड़ी दूरी पर स्थित चोटियाँ (मेघालय में) _____

   (ग) पर्वत घाटी में नदी के किनारे (जम्मू–कश्मीर में) _____

   (घ) झील के चारों ओर (उत्तर प्रदेश में)_____

2. कोवलम पुलिन की लोकप्रियता के दो कारक बताइए।

   (क) _____

   (ख) _____

3. निम्नलिखित में से कौन से तीन कारक पर्वतीय पर्यटक स्थल के महत्व को बढ़ाते हैं?

   विरदित दृश्य भूमि, फैशन में रूचि रखने वाले पर्यटक, किसी नगर से निकटता, पूजा–अर्चना के लिए मन्दिर, हिमरेखा से निकटता, बहुमंजिले भवन

   (क) _____

   (ख) _____

   (ग) _____

4. महाराष्ट्र, उड़ीसा, तमिलनाडु के एक–एक महत्वपूर्ण पुलिन का नाम बताइए।

   (क) _____ (ख)_____ (ग) _____

टिप्पणी

(ग) सांस्कृतिक केन्द्र (विरासत पर्यटन)

भारत विरासत पर्यटन में संपन्न है। यह भारत के प्रत्येक भाग के लिए सही है। आज 26 ऐसे स्थलों को विश्व पर्यटक स्थलों में शामिल कर लिया गया है। प्राचीन मन्दिर और पूजास्थल हमारी परंपरा के महत्वपूर्ण अंग हैं। विभिन्न धर्मावलम्बी इन्हें पवित्र मानते हैं। ऐसे अनेक स्थान हैं जहाँ कभी साधु सन्तों और ऋषि मुनियों के आश्रम थे। लाखों की संख्या में प्रतिवर्ष भक्त इन तीर्थ स्थानों की यात्रा करते हैं। इनकी संख्या सबसे अधिक है। अन्य पर्यटन केन्द्रों की अपेक्षा ये अधिक संख्या में हैं और देश के कोने–कोने में स्थित हैं। स्थापित मूर्तियों, प्रतीक चिन्हों, विविध वास्तुकलाओं तथा अपनी उत्पत्ति से जुड़ी अनेक पौराणिक गाथाओं के कारण ये प्राचीन मन्दिर जिज्ञासु पर्यटक को भी अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मन्दिरों, मीनारों तथा मेहराबों की शैली में एक स्थान से दूसरे स्थान पर अन्तर आ जाता है। लद्दाख और सिक्किम के गोम्पा (बौद्ध विहार) तमिलनाडु और दक्षिण भारत के राज्यों के हिन्दू मन्दिरों के गोपुरम इसके अच्छे उदाहरण हैं। गोपुरम दक्षिण भारत के मन्दिरों विशेश कर तमिलनाडू के ऐसे सिंह द्वारा या प्रवेश द्वारा हैं, जिनपर विभिन्न देवी देवताओं की मूर्तियाँ उत्कीर्ण होती हैं तथा वे अनेक प्रतीक चिन्हों से सज्जित होते हैं।

हिन्दुओं ने भारत के हर प्रमुख कोने में तीर्थों की स्थापना करके दिशा–दृष्टि का परिचय दिया है। हिन्दुओं के चार पवित्रतम तीर्थ हैं, जिन्हें धाम कहा जाता है। प्राचीन काल में परिवहन और संचार के सुविधाजनक साधनों का नितान्त अभाव था, लेकिन तब भी लोग अपने जीवन में कम से कम एक बार चारों धामों की यात्रा कर पुण्य कमाना चाहते थे। उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम्, पश्चिम में द्वारका तथा पूर्व में जगन्नाथपुरी भारत के चार पवित्र धाम हैं। इनके अतिरिक्त सात पुरी हैं, जिन्हें बड़ा पवित्र माना जाता है। पूर्व में 'पुरी', दक्षिण में 'काँची पुरम', मध्य में 'वाराणसी' (काशीपुरी), 'अयोध्या' 'हरिद्वार' (मायापुरी), मध्य में 'उज्जैन' (अवन्तिका पुरी) तथा पश्चिम में 'द्वारका पुरी' नामक सात 'पुरी' हैं। पौराणिक दृष्टि से सबसे अधिक पवित्र 12 शिव मन्दिर हैं जो भारत भर में फैले हैं। इन्हें ज्योतिर्लिंग कहा जाता है। इनकी उत्पत्ति के विषय में अनेक पौराणिक आख्यान हैं। इस तरह से 51 (इक्यावन) ऐसे पवित्र स्थान हैं, जिन्हें शक्ति पीठ कहते हैं। इनमें भक्तगण देवी के विभिन्न रूपों की पूजा करते हैं। देवियाँ जन्मदात्री माँ की प्रतीक हैं। मथुरा–वृन्दावन भगवान कृष्ण के जीवन से जुड़ा एक और महत्वपूर्ण हिन्दूओं

टिप्पणी

का तीर्थ क्षेत्र है।

धर्म के विषय में बड़ी स्वतन्त्रता रही है। इसीलिए अनेक पंथ और संप्रदाय बन गए हैं। अनेक संप्रदायों के कारण ही अनेक तीर्थ स्थानों की उत्पति हुई है। मन्दिरों का निर्माण बहुत सोच समझ कर विशिष्ट स्थानों पर किया गया है। इन्हें पर्वत शिखरों, नदी–संगमों, नदियों या झीलों के तटों पर, द्वीपों में या वन कुंजों में बनाये गये हैं। मन्दिरों के चारों ओर नगर बसते और फैलते गए। पौराणिक आख्यानों से सुपरिचित और प्रशिक्षित मार्गदर्शकों की बहुत आवश्यकता है। इनमें इतना चातुर्य होना चाहिए कि ये तीर्थों के इतिहास को सुचारू और प्रभावशाली ढंग से पर्यटकों के सामने प्रस्तुत कर सकें। इतिहास और भूगोल के प्रभाव की विशद व्याख्या करके हम अपने देश के मन्दिरों की परंपरा में पर्यटकों की अभिरूचि जाग्रत कर सकते हैं।

इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नगर, प्राचीन नगरों के खंडहर, गुफाओं के अन्दर शैलों में निर्मित मन्दिर भी आकर्षण के केन्द्र हैं। बौद्ध धार्मिक स्थलों के चैत्यों (महाकक्ष), स्तूपों, स्तम्भों और तोरणों के अवशेष भी दर्शनीय हैं। ऐसे भी मन्दिर हैं जो अंशतः या पूर्णतः समुद्र में डूब गए हैं या खंडहर बन गए हैं। ऐसे स्थानों पर नए मन्दिरों या समाधियों का पुनर्निर्माण किया गया है। धर्मानुयायी आज भी पूजा अर्चना और प्रार्थना के लिए इन स्थानों पर जाते हैं। बिहार और उसके आस पास के क्षेत्रों में भगवान बुद्ध के जीवन की घटनाओं से जुड़े अनेक स्थान हैं। ये भी अंतर्राष्ट्रीय आकर्षण के केन्द्र बन गए हैं। जैन मन्दिर, मूर्तियां और समाधियाँ, गुजरात, बिहार, राजस्थान और कर्नाटक में पाई जाती हैं। इनमें जैन मुनियों की भव्य कलात्मक मूर्तियाँ हैं। मन्दिरों की दीवारों और तोरणों पर जैन मुनियों के जीवन वृत्त उकेरे गए हैं। बिहार में हजारी बाग के निकट पारसनाथ पर्वत पर जैन धर्मावलम्बियों का पवित्रतम स्थल है।

पंजाब, बिहार, कर्नाटक, महाराष्ट्र और हिमालय के भागों में सिक्खों के प्रसिद्ध तीर्थ हैं, इनमें हरिमंदिर साहिब अमृतसर में सर्व प्रमुख है। भारत को गर्व है कि केरल और गोआ जैसे राज्यों में प्राचीन गिरजाघर आज भी ज्यों के त्यों सुरक्षित हैं। यहूदी और पारसी अल्पसंख्यकों के धर्मस्थान यत्र–तत्र पाए जाते हैं।

टिप्पणी

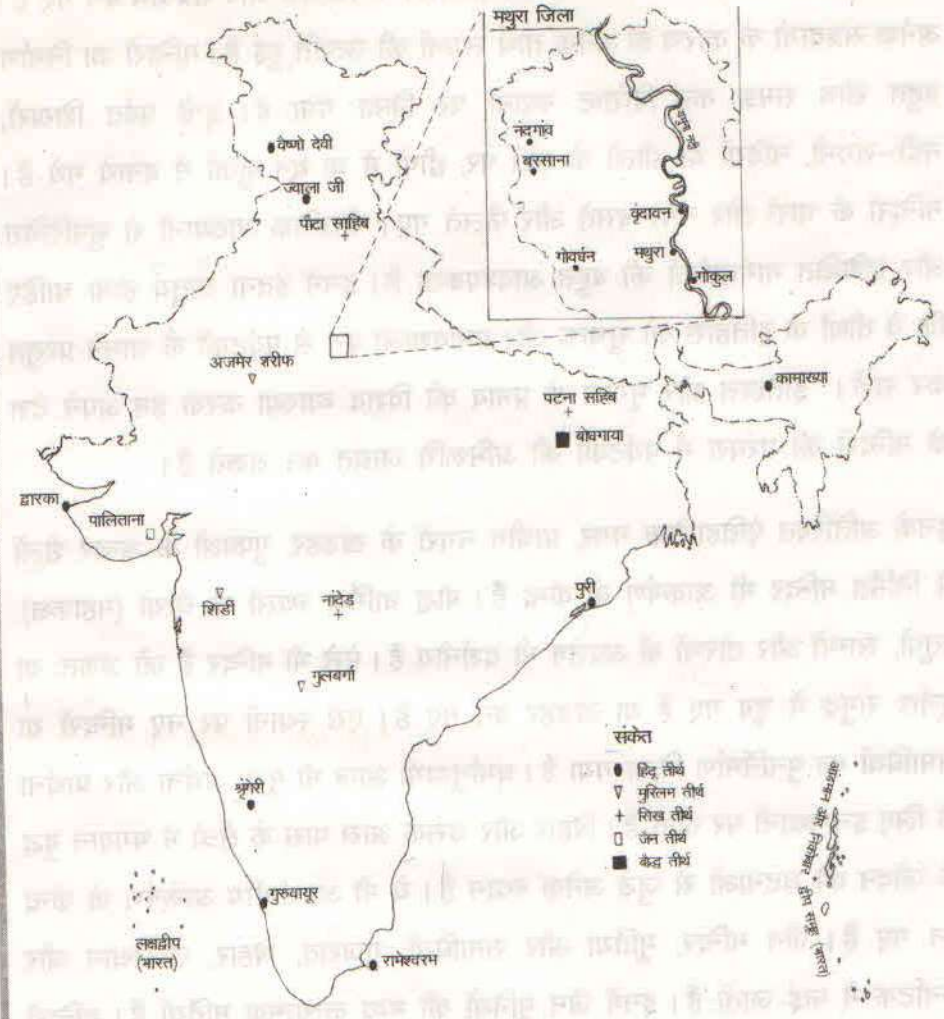

चित्र 30.9 भारत के महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्र

कुछ प्रसिद्ध मस्जिदें हैं जो अपनी ऊँची–ऊँची और कलात्मक मीनारों के कारण दूर से ही पहचानी जाती है। इनके विशाल चतुष्कोणीय प्रांगण में मुस्लिम समुदाय भारी संख्या में नमाज अदा करता है। दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद, हैदराबाद की मक्का मस्जिद, भोपाल की ताज मस्जिद, श्रीनगर की प्राचीन शाहमादान तथा नवीन हजरतबल मस्जिद, अजमेर में मुइनुद्दीन चिस्ती की मजार, दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया की मजार भी भव्य और दर्शनीय है। अनेक प्राचीन पूजास्थल सभी धर्मावलम्बियों के लिये पूजनीय हैं।

भारत में दो प्राचीन नगरों के खंडहर आज भी पर्यटकों के लिए सबसे अधिक आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं। इनमें से एक कर्नाटक में स्थित हम्पी है और दूसरा उत्तर प्रदेश में आगरा के पास स्थित फतेहपुर सीकरी है।

टिप्पणी

हम्पी के खंडहरों में दक्कन के पठार की प्राचीन शैलों का प्रदर्शन देखने को मिलता है। राजमहलों, मन्दिरों, पण्यवीथियों, तुंगभद्रा नदी के तट के निकट स्थित जलाशयों के खंडहरों में यह प्रदर्शन दिखाई पड़ता है। हम्पी दो शताब्दियों तक विजय नगर के विशाल सम्राज्य की राजधानी रही है। इस सम्राज्य का विस्तार अरब सागर से लेकर बंगाल की खाड़ी तट था। इसमें गोआ के प्रदेश भी शामिल थे।

राजपूतों, मुगलों, मराठों या अपने समय के अन्य शक्तिशाली शासकों ने सुरक्षा की दृष्टि से या अपने वैभव के प्रदर्शन के लिए इन दुर्गो का निर्माण किया था। दिल्ली के निकट महरौली में कुतुबमीनार और राजस्थान में चित्तौगढ़ के अन्दर बने विशाल कीर्ति विजय स्तंभ का आकर्षण पर्यटकों को दूर दूर से खींच लाता है। अंग्रेज शासकों ने भी अपने चरमोत्कर्ष के दिनों में एक विशिष्ट शैली के दुर्गो का निर्माण किया था। कोलकाता का फोर्ट विलियम तथा चेन्नई का सेंट जार्ज इसके उदाहरण हैं। कोच्चि का पुर्तगाली दुर्ग भी इसी परंपरा की एक कड़ी है। कुछ प्रसिद्ध मन्दिरों, खंडहर बने नगरों, स्मारकों और दुर्गो की स्थिति को भारत के मानचित्र में देखिए।

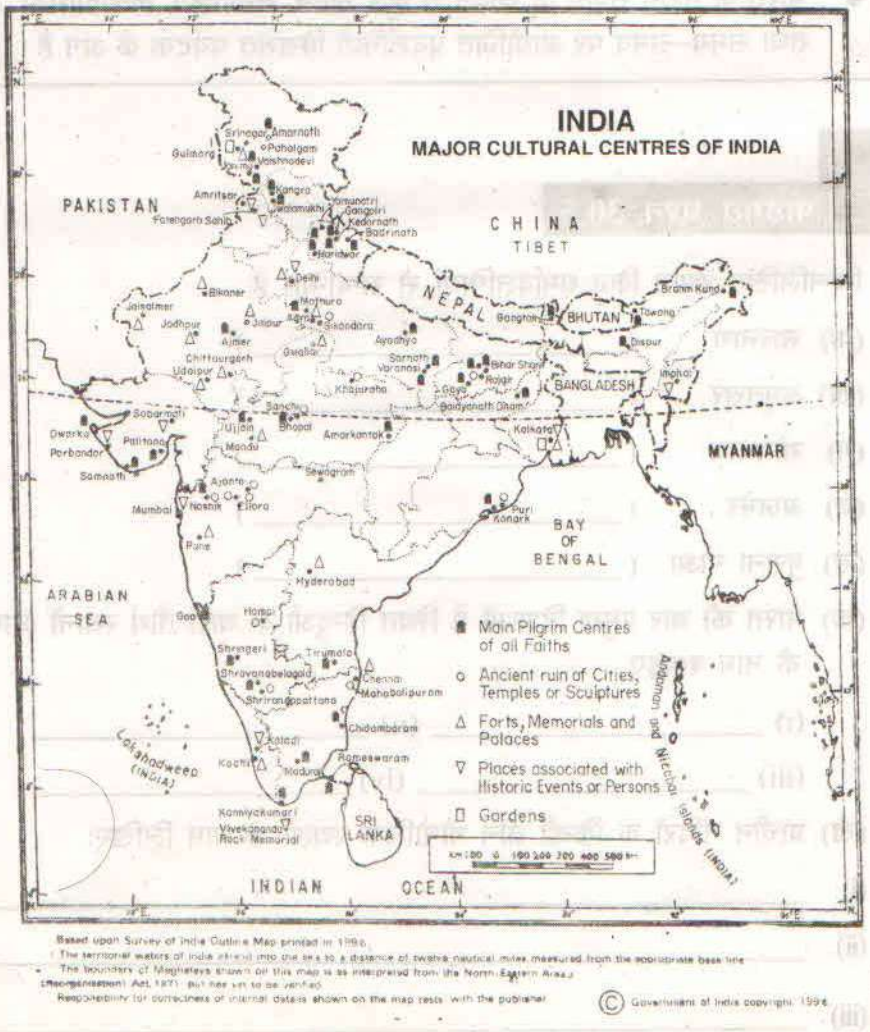

Based upon Survey of India Outline Map printed in 1996.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
The boundaries of Meghalaya shown on this map is as interpreted from the North-Eastern Area (Reorganisation) Act, 1971 but has yet to be verified.
Responsibility for correctness of internal details shown on the map rests with the publisher.
© Government of India copyright 1996

चित्र 30.10 भारत के प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्र

भारत की सांस्कृतिक धरोहर में वे स्थान भी शामिल हैं, जो भारत के महान सपूतों के त्याग, तपस्या और वीरता तथा साहसपूर्ण कृत्यों की भूमि हैं। उदयपुर के निकट हल्दी घाटी, अमृतसर का जालियाँवाला बाग, पोर्टब्लेअर का सेलुलर कारावास, कन्याकुमारी में विवेकानन्द का शैल स्मारक, अहमदाबाद और महाराष्ट्र के सेवाश्रम में गांधी जी के आश्रम, तथा पांडिचेरी में महर्षि अरविन्द आश्रम कुछ ऐसे ही उदाहरण हैं। केरल में अलवाए के निकट स्थित कालड़ी में आदिगुरू शंकराचार्य जन्मस्थान भी भुलाने के योग्य नहीं है।

हमारे प्रमुख नगरों या ऐतिहासिक अभिरूचि के केन्द्रों में स्थापित और संचालित संग्रहालयों, चिड़ियाघर, कलावीथियों तथा स्वतंत्र भारत में बने नए नगरों का सांस्कृतिक महत्व किसी भी प्रकार कम नहीं हैं।

- तीर्थ स्थान, प्राचीन दुर्ग, स्मारक और विविध प्रकार के भग्नावशेष सांस्कृतिक केन्द्र ही हैं।
- भारत के महान सपूतों के जीवन से जुड़े स्थान, संग्रहालय, कलावीथियों तथा समय–समय पर आयोजित प्रदर्शनियाँ विरासत पर्यटक के अंग हैं।

पाठगत प्रश्न 30.5

1. निम्नलिखित स्थान किन धर्मावलम्बियों से सम्बन्धित है:

   (क) सारनाथ (________________)

   (ख) अमृतसर (________________)

   (ग) सोमनाथ (________________)

   (घ) अजमेर (________________)

   (ङ) पुराना गोआ (________________)

2. (क) भारत की चार प्रमुख दिशाओं में स्थित हिन्दुओं के चारों तीर्थ स्थानों (धामों) के नाम बताइए:

   (i) ______________ (ii) ______________

   (iii) ______________ (iv) ______________

   (ख) प्राचीन मंदिरों क किन्हीं तीन भौगोलिक स्थलों के नाम लिखिए:

   (i) ____________________________

   (ii) ____________________________

   (iii) ____________________________

[illegible] जिन्हें साहसिक पर्यटक कहा जा सकता है। 25 से 35 वर्ष के आयु वर्ग के पर्यटकों को भारी संख्या में आकर्षित करने के लिए इसका संवर्धन किया जा सकता है। विदेशी पर्यटकों के लिये पूर्व निर्धारित पर्यटन कार्यक्रमों में इसे शामिल किया जा सकता है। उनके ठहरने की 28 दिनों की औसत अवधि में एक अतिरिक्त सप्ताह इसके लिए जोड़ा जा सकता है।

टिप्पणी

(i) पैदल भ्रमण (ट्रेकिंग)

इस शब्द का प्रयोग कभी अफ्रीकियों के बैलगाड़ी द्वारा लंबे प्रवास के लिए किया जाता था। लेकिन आजकल इसका प्रयोग मनोरंजन के लिए की जाने वाली श्रम साध्य यात्राओं और पैदल भ्रमण के अर्थ में किया जाता है। यह एक तरह से मनोरंजन से भरपूर क्रिया-कलाप है। स्थल सेना के जवानों के द्वारा सुरक्षा की दृष्टि से किए गए लंबे भ्रमण (मार्च) से इसकी तुलना की जा सकती है।

चित्र 30.11 लद्दाख के ट्रेकिंग पथ

टिप्पणी

ट्रैकिंग के लिए बस्ती से बहुत दूर स्थित ऊबड़–खाबड़ भूमि को चुना जाता है। इसमें पर्यटक पहाड़ियों पर चढ़ते उतरते हैं, दर्रा को पार करते हैं, तथा ऊँचे स्थानों के परिवर्तन शील मौसम की असंख्य दशाओं को झेलते हैं। यह बहुत कम खर्चीला साहसिक पर्यटन है। इसमें तो केवल अच्छी शारीरिक शक्ति, धैर्य, तथा प्रकृति निरीक्षण क्षमता और इच्छा के अलावा किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं होती है। ऊँचे–ऊँचे पर्वतों पर पैदल भ्रमण (ट्रैकिंग) सचमुच साहस का काम है, लेकिन पूरे देश में फैली कम ऊँची पहाड़ियों में भी आसानी से संपन्न होने वाले ट्रैकिंग की योजना बनाई जा सकती है।

सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश, लद्दाख और आस पास के क्षेत्रों में ट्रैकिंग पथ निर्धारित किए गए हैं। कुमायूँ–गढ़वाल, हिमाचल प्रदेश हिमालय के ऊपरी भागों में छोटे और लम्बे अनेक ट्रैकिंग पथ हैं। इनमें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मार्ग तथा कैलाश–मानसरोवर की तीर्थयात्रा के ट्रेकिंग पथ भी शामिल हैं।

(ii) पर्वतारोहण

पर्वतीय दृश्य भूमियाँ तथा हिमालय के ऊँचे–ऊँचे शिखर न केवल विदेशियों को अपितु भारतीय पर्वतारोहियों को भी आकर्षित कर रहे हैं। नैन सिंह और किशन सिंह, जिनके विषय में पहले भी चर्चा की जा चुकी है, पहले भारतीय पर्वतारोही थे। एवरेस्ट विजेताओं में प्रमुख तेनजिंग नोर्गे पर आकर ही पर्वतारोहण की परंपरा समाप्त हो गई है। हमारे देश के अनेक स्त्री–पुरुषों और विदेशी लोगों ने भी बहुत थोड़े से उपकरणों के सहारे पर्वतारोहण अभियान सफलता पूर्वक पूरे किये हैं। भारत की साहसी पर्वतारोही तथा ऊँचे पर्वतों की ट्रैकर बछेन्द्रीपाल का नाम इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। समय के बीतने के साथ–साथ एवरेस्ट का पर्वतारोहण आज कल शुद्ध रूप से व्यापार बन गया है। विभिन्न देशों के अनेक पर्वतारोही दलों ने नेपाली सरकार को लाखों रुपए देकर एवरेस्ट अभियान के पहले से आरक्षण करवा रखे हैं। इसमें शेरपा पथ प्रदर्शकों की सेवाएँ और अभियान शिविरों तक उपकरणों को पहुँचाने का शुल्क भी शामिल है। नेपाली शेरपाओं के लिए एवरेस्ट का आरोहण जीविका का एक मात्र साधन बन गया है। अतः वे लोग एवरेस्ट शिखर के आधार शिविरों के निकट ही बस गए हैं। नेपाली सरकार के लिए यह विदेशी मुद्रा अर्जन करने का सबसे बड़ा साधन है। इसके द्वारा भारत में पर्वतारोहण के आर्थिक महत्व की पुनर्पुष्टि होती है और प्राकृतिक सौन्दर्य को संरक्षित करने का पक्ष भी सुदृढ़ होता है।

हिमाचल प्रदेश के उत्तरी आधे भाग में उच्च हिमालय के अनेक हिममंडित शिखर, हिमानियाँ और गहरी घाटियाँ हैं। औसतन 20–20 किलोमीटर की दूरी पर लगभग 150 शिखर ऐसे हैं, जिनकी ऊँचाई 5400 मी. से अधिक है। प्राचीन काल से लेकर कुछ समय पहले तक लोगों की ऐसी धारणा थी कि पर्वत शिखरों पर चढ़ना उनको अपमानित और अपवित्र करना है। इसी कारण इनमें से अनेक को न तो कोई नाम दिया गया है और न ही उन पर कोई सफल पर्वतारोहण अभियान हुआ है। मई से लेकर अक्तूबर तक यहाँ मौसम बहुत अच्छा रहता है। शिविरों के आधार तक भारी लागत लगा कर सड़कों

टिप्पणी

का जाल बिछाया गया है। इन सुविधाओं ने प्रशिक्षण और उपकरणों के मिल पाने की तकनीकी कठिनाई की कमी का पूरा कर दिया है। जम्मू एवं कश्मीर राज्य में फैली पीरपंजाल, हिमाद्रि–जास्कर, लद्दाख, और काराकोरम पर्वत श्रेणियों में अनेक ऊँचे–ऊँचे पर्वत शिखर हैं। इनकी ऊँचाई 5000 मी. से लेकर 7000 मी. तक है। इन पर्वत शिखरों पर खड़े होकर तिब्बत (चीन) और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों को देखा जा सकता है।

उत्तराखंड हिमालय को एक अतिरिक्त लाभ है कि वह दिल्ली के निकट है। गंगा के उद्गम स्थल गोमुख के आस–पास का क्षेत्र पूरे संसार में पर्वतारोहण के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। यहाँ अनेक हिमानियों, पर्वतीय झीलों और ऊँचे शिखरों के समूह हैं। पूर्व की ओर सिक्किम हिमालय में यहाँ के लोगों की परंपराओं की झलक देखने को मिलती है। यहाँ की पर्वतीय पगडंडियों पर पूजा अर्चना के लिए फहराये गए ध्वजों की पंक्तियां दिखाई देती हैं। बौद्ध विहारों की दीवारों पर पीतल की बेलनाकृतियाँ हैं, जिन्हें घुमाना शुभ माना जाता है। उत्तरी सिक्किम में अधिक ऊँचाई वाले पाँच क्षेत्र हैं। इनमें से 8000 मीटर से अधिक ऊँचा कॉचनजुंगा उल्लेखनीय है। तिब्बत के साथ लगने वाली सीमा की संवेदनशीलता के कारण यहाँ केवल दो पर्वत शिखरों पर चढ़ने की अनुमति है। हिमानियों की दृश्य भूमियों के सौन्दर्य का अवलोकन तथा 3700 मीटर से अधिक की ऊँचाईयों पर सैर करना क्या कुछ कम आकर्षक है। हिमानियों, हिमगुफाओं, हिमनदीय झीलों का प्राकृतिक सौन्दर्य शब्दातीत हैं। इन्हीं हिमानियों का हिम ही तो पिघल पिघलकर हमारी नदियों को सदानीरा बनाए रखता है।

मनाली, दार्जिलिंग, और उत्तर काशी के भारतीय पर्वतारोहण संस्थान तथा दिल्ली की भारतीय पर्वतारोहण संस्था, पर्वतारोहण अभियान के कार्यक्रमों को बनाने और मार्गदर्शन करने में सहायता करती हैं। ये संस्थाएँ आकाशवाणी से मौसम के विशेष बुलेटिनों का प्रसारण करवाती हैं। ये पर्वतारोहियों के लिये आवश्यक जानकारी जुटाती है तथा आपातकालीन परिस्थितियों में भारतीय वायु सेना के साथ सहयोग करती है। ऊँचे पर्वतीय प्रदेशों का पर्यावरण बहुत ही संवेदनशील है। अतः पर्वतारोहण अभियानों की अधिक संख्या में स्वीकृतियों पर नियमन के द्वारा ही यहाँ के पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सकता है। आने वाले दिनों में पर्वतीय पगडंडियाँ पर कूड़ा–करकट के फैलाव पर भी नियन्त्रण आवश्यक है। बाह्य हिमालय के गिरिपदों पर और सह्याद्रि मध्य भारत की पर्वत श्रेणियाँ शैल आरोहण के लिए अनेक उचित स्थान उपलब्ध हैं।

(iii) शीतकालीन पर्यटक स्थल

हिमालय के हिमाच्छादित ढालों पर हिमतरण (स्कीइंग) बहुत लोकप्रिय शीतकालीन खेल है। भारत के हिमालय क्षेत्र में वर्ष भर हिमाच्छादित भूमि उपलब्ध है। हिमतरण की उत्तेजना विदेशी पर्यटकों को आश्वस्त कर सकती है कि भारत में मन्दिरों, स्मारकों, मेलों, और रंग–रंगीले उत्सवों के अतिरिक्त देखने और करने के लिए और भी बहुत कुछ है। 2730 मी. की ऊँचाई पर स्थित गुलमर्ग केवल पर्वतीय पर्यटन स्थल

टिप्पणी

ही नहीं है, अपितु यह भारत का सबसे ऊँचा हिमतरण क्षेत्र भी है। यह खेल यहाँ बहुत अच्छी तरह से विकसित हुआ है। हिमतरण का यह सबसे बड़ा तथा सर्वोत्तम रूप से सुसज्जित पर्यटन स्थल है। दिसंबर से लेकर अप्रैल तक यहाँ हिम की बड़ी मोटी परत जमीं रहती है तथा हिमतरण के लिए यहाँ कुर्सीयान, हिमतरण लिफ्ट तथा रज्जु पथ की सुविधाएँ प्राप्त हैं। यहाँ प्रशिक्षक 10 से लेकर 21 दिनों के कोर्स चलाते हैं, जिनमें हिमतरण और पर्वतारोहण सिखाया जाता है। हिमतरण और पर्वतारोहण के मार्ग खिलनमर्ग शद्वल (चरागाह) तक जाते हैं। यह स्थान गुलमर्ग से 5 कि. मी. दूर, 3045 मी. की ऊँचाई पर स्थित है और 8 कि. मी. आगे अल्पाथेर झील है। यह झील 4135 मी. ऊँचे शिखर वाली पहाड़ी की तलहटी में स्थित है। हिमतरण के लिए इस पहाड़ी के ढालों की जाँच–पड़ताल की गई थी। जनवरी 1998 में यहाँ हैलीकोप्टर की सहायता से हिमतरण का खेल शुरू किया गया था। इसके प्रारंभ होने से इस प्रकार के खेल को शुरू करने वाला भारत एशिया का पहला देश बन गया। हिमतरण करने वालों को हैलीकोप्टर द्वारा पहाड़ी के शिखर तक ले जाया जाता है। जहाँ से वे हिमतरण करते हुए नीचे आते हैं। इस प्रकार हिमतरण करने वाला पहाड़ी के शिखर पर चढ़ने के परिश्रम से बच जाता है। फ्रांस में हैली–हिमतरण पर प्रतिबंध लगा दिया गया क्योंकि हैलीकोप्टर के शोर से पर्वतीय जीवजन्तु व्याकुल हो जाते थे। कना[illegible] हिमतरण स्थल, सभ्यता के केन्द्रों से दूर हैं।

कश्मीर इस प्रकार के खेल के लिए अधिक उपयुक्त है, क्योंकि यहाँ के क्षेत्र विशाल हैं और घाटियाँ विस्तृत हैं, जिससे यहाँ कनाडा जैसी समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता है। हिमतरण के इस खेल से प्रतिवर्ष 2 करोड़ रूपयों से अधिक की आय होती है। हैली–हिमतरण बहुत ही महँगा खेल है, अतः केवल यूरोप और उत्तरी अमेरिका के धनाढ्य पर्यटक ही इस खेल का आनन्द ले सकते हैं।

हिमाचल प्रदेश में नारकंडा हिमतरण के लिए प्रसिद्ध है। यह शंकुधारी वनों के बीच 2700 मी. की ऊँचाई पर स्थित है। हिन्दुस्तान–तिब्बत, राष्ट्रीय महामार्ग यहीं से होकर गुजरता है। नारकंडा शिमला से 64 कि.मी. उत्तर में है। यहाँ के ढालों पर हाथू शिखर से लेकर कोटगढ़ में स्टोक महोदय की सेबों की भूमि तक जनवरी से अप्रैल तक, 6 से 10 मी. तक मोटी बर्फ की परत जमी रहती हैं। नारकंडा और शिमला के निकट स्थित कुफरी नामक स्थान भी हिमतरण के लिए लोकप्रिय होता जा रहा है। मनाली के निकट सीलांग नाला के आस–पास के ढाल भी हिमतरण के लिए उपयुक्त हैं। यहाँ शीतऋतु तथा ग्रीष्म ऋतु की कुछ अवधि में मौसम हिमतरण के लिए अनुकूल रहता है। गढ़वाल हिमालय में बद्रीनाथ के रास्ते पर जोशी मठ के निकट 'औली' में हिमतरण पर्यटक स्थल का विकास किया गया है। यहाँ से नन्दा देवी शिखर और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों का दृश्य बहुत सुन्दर दिखता है। 2000 मी. की ऊँचाई पर स्थित मठ को 3900 मी. ऊँचे कौरी दर्रे के ढालों के शीर्ष तक एशिया की सबसे बड़ी 'तार ट्राली' से जोड़ा गया है। लेकिन यहाँ अन्य प्रकार की सुविधाओं की कमी है। कड़कड़ाती ठंड में गरम पानी का न मिलना, आवास केन्द्रों में गरमाहट और चिकित्सा की व्यवस्था का न होना तथा हिमतरण के जूते जैसे उपकरणों का निम्न कोटि का होना औली की कुछ सामयिक असुविधाएँ हैं।

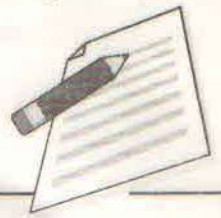

टिप्पणी

गोल्फ के प्रेमियों के लिए गुलमर्ग और शिमला के निकट नलडेरा में गोल्फ के अच्छे मैदान हैं। गुलमर्ग का गोल्फ का मैदान संसार में सबसे अधिक ऊँचा हैं। शिमला नगर में तथा गुलमर्ग के निकट स्केटिंग के लिए बर्फ को जमाकर स्केटिंग के मैदान बनाये गये हैं। इसके बाद आने वाले वर्षो में हिम सर्फिंग को विकसित करने के बारे में सोचा जा सकता हैं।

(iv) हैंग ग्लाइडिंग और पैराग्लाइडिंग

इन दो क्रीड़ाओं से चील पक्षी की भाँति अकाश की ऊँचाइयों में उड़ने को रोमांचक आनन्द मिलता हैं। पैरा ग्लाइडिंग के पंखों की आकृति वायुसंचरण के अनुकूल होती है तथा वे हैंग–ग्लाइडिंग के पंखों की तुलना में दस गुना हल्के होते हैं। पैराग्लाइडिंग साहस प्रिय पर्यटकों में लोकप्रिय हैं। इसके विपरित हैंग ग्लाइडिंग अब केवल प्रतियोगिताओं तक ही सीमित हो गया है। इस खेल के केन्द्र हिमाचल प्रदेश की बिलासपुर, मनाली और बीर (कांगडा) घाटियों में तथा तमिलनाडु के उदगमंडलम में स्थित हैं। अच्छे प्रशिक्षकों की कमी तथा उपकरणों का अत्यधिक महँगा होना इस खेल के विकास में मुख्य बाधाएँ हैं।

(v) जलक्रीड़ा पर्यट ा

भारत में जल क्रीड़ा के लिए नदी नौकायन की बहुत संभावनाएँ हैं। लेकिन अब तक यह क्रीड़ा ऋषिकेश के पास गंगा में, मनाली के निकट व्यास में तथा लद्दाख में, सिन्धु नदी के कुछ भागों में ही संभव हो पाया है। लेकिन सिक्किम में तिस्ता असम में ब्रह्मपुत्र, लाहोल (हि.प्र.) में चन्द्रा तथा अरुणाचल प्रदेश में भाराली नदियाँ भी नदी नौकायन क्रीड़ा के उपयुक्त हैं। आयातित महँगे उपकरणों के स्थान पर स्वदेश निर्मित उपकरणों का उपयोग तथा प्रशिक्षकों और नदी पथ प्रदर्शकों की व्यवस्था, इस क्रीड़ा के संवर्धन के लिए अत्यावश्यक हैं। भारत में प्राकृतिक तथा मानव निर्मित झीलों की संख्या काफी है। नमें पाल नौकायन, काँटे–जोरी से मछली पकड़ने और पवन संप्लवन (विंड सर्फिंग) जैसी जल क्रीड़ाओं का संवर्धन किया जा सकता है। झीलों के अतिरिक्त भारत के पास एक लंबा तट रेखा है। इस तटरेखा पर एक ओर गोवा के निकट उत्तल तरंगों का गर्जन तो दूसरी ओर इसके विपरीत हमारे द्वीप समूहों के प्रवाल तटों का शान्त समुद्री जल हैं। अभी तक जल क्रीड़ाओं का सबसे अच्छा विकास केवल दो झीलों में हुआ है। इनमें से एक है हिमाचल प्रदेश के पौंग बांध के पीछे बनी झील तथा दूसरी है शिलांग की उमैम। गोवा में माँडवी नदी के तट पर पणजी में पहले–पहल जल क्रीड़ा का उत्सव मनाया गया। इससे सिद्ध होता है कि गोवा के पुलिनों पर धूप सेंकने, आमोद प्रमोद करने तथा तैरने के अलावा और भी क्रिया–कलापों की संभावनाएं हैं। गोवा की तटीय पट्टी पर नदियों और नहरों का जाल सा बिछा है। इनमें जलक्रीड़ाओं के विकास की बहुत संभावनाएँ हैं। यदि अच्छे प्रशिक्षक और सस्ते उपकरण उपलब्ध हो जाएँ तो इनकी क्रीड़ाओं के लिए अधिकाधिक स्वदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।

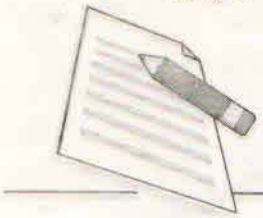

टिप्पणी

लक्षद्वीप तथा अंडमान निकोबर द्वीप समूहों के प्रवालों में समुद्री जल स्वच्छ और पारदर्शी है। उसे अत्यधिक साहसी पर्यटकों के लिए गोताखोरी के खेल के आदर्श स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है। गोताखोरी में व्यक्ति नाव पर से सिर के बल समुद्र में 40–50 मीटर की गहराई तक डुबकी लगता है। इसी प्रकार की एक और जलक्रीड़ा है–स्नौर्किलिंग। यह शान्तिपूर्ण क्रीड़ा है। स्नौर्किलिग रेशा काँच से बना एक मुखौटा है, जो गोताखोर की नाक और आँखों को ढक लेता है। इसमें साँस लेने और छोड़ने के लिए नलियाँ लगी रहती हैं। कम गहराई की गोताखोरी के लिए यह यन्त्र उपयोगी है। गोताखोर इस यन्त्र के द्वारा पानी में रहकर भी साँस ले सकता है। स्कूबा भी गोताखारी में सहायता करने वाला यन्त्र है। इस यन्त्र में ऑक्सीजन गैस का सिलैंडर होता है, जिसे कमर पर बाँध कर गोताखोर पानी में वहाँ तक डुबकी लगा सकता है, जहाँ तक सूर्य का प्रकाश पहुँचता है। इन क्रीड़ाओं से व्यक्ति रोमांचित हो उठता है। समुद्र के जल में मछलियों के झुण्डों के मध्य भार हीनता की स्थिति में भ्रमण कितना रोमांचक होता है।

(vi) गुफा पर्यटन

भारत में अनेक गुफाएँ और शैलों को काटकर बनाए गए अनेक मंदिर हैं। लेकिन गुफा पर्यटन के लिए इनका विकास करने पर विचार नहीं किया गया है। औरंगाबाद के निकट लगभग 30 गुफाएँ हैं। इनमें अजंता सबसे अधिक लोकप्रिय है। चित्रकूट में भी दो गुफाएँ हैं, जिनमें नदी का जल बहता रहता है। इनके विषय में एक कहानी है कि राम और लक्ष्मण इन गुफाओं में चट्टान पर बैठकर अपना दरबार लगाया करते थे। मध्य भारत में पंचमढ़ी और भोपाल के निकट भीम बेटका के आस–पास लगभग 500 गुफाएँ हैं। ये गुफाएँ सघन वनों से ढकी ऊबड़–खाबड़ भूमि में फैली हैं। गुफाएँ सात विभिन्न युगों में प्रागैतिहासिक मानव को आश्रय प्रदान करती रही हैं। इनमें से कुछ गुफाओं में आदिमानव द्वारा निर्मित शैल चित्र भी मिले हैं। भुवनेश्वर के निकट खंड़गिरि और उदयगिरि नाम की दो पहाड़ियाँ हैं। इनकी गुफाओं में शैलों को काटकर अनेक मूर्तियाँ बनाई गई हैं। मूर्तियों में जैन मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

मेघालय में चेरापूँजी के निकट गारो पहाड़ियाँ चूने के पत्थर की बनी हैं। इनमें बहुत सुन्दर गुफाएँ हैं। इन गुफाओं में सुविकसित स्टैलैक्टाइट तथा स्टैलैग्माइट हैं। इस राज्य में कुछ समय पूर्व एक 19.2 कि. मी. लंबी गुफा की खोज की गई है। यह एशिया की सबसे लंबी गुफा है। इसके अलावा जयन्तिया पहाड़ियों में 200 गुफाओं की खोज बहुत बड़ी उपलब्धि है। कुछ समय पूर्व तक तो गुफा पर्यटन का संवर्धन केवल कोरी कल्पना ही था। लेकिन अब राज्य सरकार ने गुफाओं के विषय में एक विशेष पुस्तिका प्रकाशित की है तथा भ्रमण के पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों की व्यवस्था भी की है।

(vii) वन पर्यटन

भारत में जितने विविध प्रकार के पेड़–पौधों और जीव जन्तु पाए जाते हैं, उसका आधे भी पूरे अफ्रीका में नहीं मिलते हैं। अपनी विश्वविख्यात संस्कृति विरासत की तरह भारत की जैव विरासत भी बहुत समृद्ध है। वन पर्यटन का विकास राष्ट्रीय उद्यानों

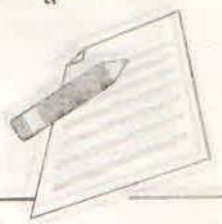

टिप्पणी

अभयारण्यों और सभी प्रकार की नम भूमियों में होता है। वन्य जीवों में सभी प्रकार के जंगली पेड़–पौधे तथा जंगली जीव जन्तु शामिल हैं। इनमें किसी प्रकार का मानव हस्तक्षेप नहीं होता, और वह वन्य जीवों की श्रेणी में गिने जाते हैं। पेड़–पौधे, प्रमुख स्तनपायी जीवजन्तु, तथा कीट पतंग इसके प्रमुख अंग हैं। वन्य जीवों को प्यार करने वाले पर्यटकों के लिए सबसे अधिक लोकप्रिय वन क्षेत्रों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है।

कश्मीर घाटी का दाचीगाम अभयारण्य हँगुल नामक कस्तूरी मृग की आश्रय स्थली है। हँगुल को कश्मीरी मृग भी कहते हैं। भारत के पहले राष्ट्रीय पार्क का नामकरण प्रसिद्ध वन्य जीव संरक्षक जिम कार्बेट के नाम पर किया गया है। यह नैनीताल की पहाड़ियों की उपत्यकाओं में फैला हैं। यह पार्क जंगली हाथियों और बाघों की आवास भूमि है। इस पार्क का विस्तार आगे रामगंगा तक है। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश में विन्ध्याचल और सतपुड़ा पहाड़ियों के बीच फैला है। इस उद्यान में बाघ, तेंदुए और चीतल (हिरण) स्वच्छन्द रूप से विचरण करते हैं। इसके पास ही बाँधवगढ़ हैं जो विशेषकर बाघों के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थान में भरतपुर के निकट घाना पक्षी विहार है। यह पक्षी विहार उत्तरी तथा मध्य एशिया से आने वाले प्रवासी पक्षियों के लिए प्रसिद्ध है। अनेक जलपक्षी यहाँ के स्थायी निवासी भी है। मेल घाट महाराष्ट्र के विदर्भ प्रदेश में है। यहाँ बाघों और तेंदुओं को संरक्षण दिया गया है। एशियाई सिंहों की एकमात्र आश्रय स्थली सौराष्ट्र के 'गिर' नामक जंगल हैं। बाँदीपुर राष्ट्रीय उद्यान कर्नाटक के पश्चिमी घाट क्षेत्र में फैला है। यह उद्यान हाथियों के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थान में भारतीय सोन चिड़िया का घर है। सोहन चिड़िया एक बड़े आकार का सारस है। उड़ीसा की चिल्का झील पक्षियों समेत अनेक प्रकार के जल–जीवों के लिए प्रसिद्ध है। असम में फैला काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान एक सींग वाले गैंडे के लिए विख्यात हैं। भूटान की सीमा के निकट असम राज्य में मानस राष्ट्रीय उद्यान है। यह हाथियों, बाघों और गैंडों की आवास भूमि है। सुदूर दक्षिण में केरल का पेरियार राष्ट्रीय उद्यान है। यहाँ जंगली सूअर, हाथी और हिरण स्वच्छंदता से विचरण करते हैं। 800 भालूओं के संरक्षण के लिए खजुराहो या ओरछा के निकट एक उद्यान विकसित करने का प्रस्ताव है। भारत में विविध प्रकार की प्राकृतिक आवास भूमियों में होने पर गर्व करना उचित ही है। सघन वनों से ढकी पहाड़ियाँ, तरंगित घास भूमियाँ, विशाल पठार, उथले जल वाली दलदली भूमियाँ, दलदली घासस्थलियाँ, खारे पानी के अनूप सभी इसकी विविधता की प्रतीक हैं। इन सभी विविध आवास भूमियों को मानचित्र पर अंकित कीजिए।

राष्ट्रीय उद्यानों के नए–नए क्षेत्रों को पर्यटकों के लिए खोलना तथ पारिमित्र परिवहन का उपयोग, वन पर्यटन के संवर्धन का प्रोत्साहित करते हैं। पारिमित्र परिवहन के साधन वे हैं जो न तो प्रदूषण फैलाते हैं, और न ही अपने शोर शराबे से वन्य जीवों की शान्ति भंग करते हैं।

इसके साथ–साथ पैदल भ्रमणकारियों (ट्रैकरों), पद–यात्रियों और पर्वतारोहियों की भीड़–भाड़ में से भी वनों को बचाना जरूरी है। पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए बनाई

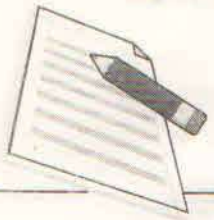

टिप्पणी

गयी ठोस नीतियों का तकाजा है कि स्थानीय लोगों को वन्य जीवों के संरक्षण के प्रति जागरूक बनाया जाए। तुरन्त भारी आमदनी के लालच से काम चलने वाला नहीं है। पर्यावरण के उपयुक्त संरक्षण के बिना वन्य जीवों का संरक्षण असंभव है।

पैदल भ्रमण, पर्वतारोहण, शैल–आरोहण, नदी नौकायन, जल और हिमतरण (स्कीइंग) हैंग ग्लाइडिंग, वन्य जीवों की आवास भूमियों में भ्रमण तथा गुफा पर्यटन साहस पूर्ण क्रीड़ाएँ हैं। ये सभी पर्यटकों के लिए गन्तव्य स्थल हैं।

पाठगत प्रश्न 30.6

1. निम्नलिखित जीवों के लिए प्रसिद्ध वन्य जीव अभ्यारण्यों के नाम तथा उनकी स्थिति बताइए।

   एशियाई सिंह, हँगुल या कश्मीरी मृग, एक सींग वाला गैंडा, जल पाँखी, जंगली सूअर।

2. तीन भारतीय पर्वतारोहण संस्थान की स्थिति मानचित्र पर अंकित कीजिए। उनके क्या कार्य हैं?

3. फ्रांस से भिन्न कश्मीर के गुलमर्ग में हैलीकॉप्टर द्वारा हिमतरण की कौन सी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

आपने क्या सीखा

आपने पुराने समय के पर्यटक और उनकी यात्राओं के उदाहरणों के विपरीत उनका अर्थ इस अध्याय में समझा है। पर्यटन अब भिन्न आधारों पर कई प्राथमिक प्रकारों में पुनः विभाजित किया गया है। मनोरंजन या मनोविनोद और अवकाश के अवसर हर प्रकार के आधुनिक पर्यटन का अभिन्न अंग बन गये हैं।

पर्यटन के विकास के लिए भारत के संसाधनों में भारी संभाव्यता निहित है। मौसम और जलवायु की विविधता के अलावा, समृद्ध जैव विविधता है जैसे कि रक्षित पौधे, वन्य पशु और पक्षी। ये सभी भीड़–भाड़ से दूर एकाकी क्षेत्रों में खूब फल–फूल रहे हैं।

इसके बाद दृश्य भूमियों में पर्वतीय क्षेत्र आते हैं। जहाँ पर्वतों, चोटियों और हिमीय ढलानें, पहाड़ियां, कगारों, विविध शैल रचनाएँ, गुफाएं और विविध आर्द्र भूमियाँ शामिल हैं। पुलिन पर्यटन संसाधन हमारे विस्तृत तटीय भागों में फैले हैं जहां कि विविध प्रकार की पुलिन बहुत आकर्षक और मनोहारी हैं।

पहाड़ियों के साथ–साथ सीढ़ीदार खेतों पर फैले बागान पहाड़ियों से घिरे खेत और खुली घास भूमियाँ पर्यटकों के लिए अन्य आकर्षक क्षेत्र हैं।

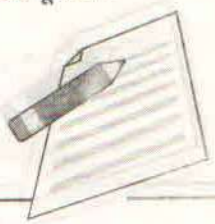

टिप्पणी

हमारी प्राचीन संस्कृति पर्यटन को बढ़ावा देने वाली है। शताब्दियों से चली आ रही हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत एक और महत्वपूर्ण संसाधन है। वर्तमान में ये प्राचीन कला और उत्सव पर्यटकों के लिए बहुत पसन्द की चीजें हैं। आने वाले पर्यटकों की बढ़ती हुई संख्या ने लाखों स्थानीय लोगों के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराया है।

आधुनिक पर्यटन के ये सब संसाधन धन उपार्जन के लिये अत्यधिक प्रासंगिक हैं विशेष रूप से विश्व भर में आर्थिक सुधारों के वर्तमान युग में

पर्यटक स्थलों को कई वर्गों में वर्गीकृत किया गया है जैसे कि पर्वतीय तथा पहाड़ी पर्यटन स्थल, पुलिन स्थल विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक केंद्र और कई प्रकार के साहसिक पर्यटन स्थल। इन सभी स्थलों को स्थिति, विशेषताएं और संभावित आकर्षणों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। जिन स्थानों की पहुंच आसान, रहने–सहने की सुख–सुविधा सुलभ हैं वहाँ बड़ी संख्या में पर्यटक खिंचे चले आते हैं और ऐसे स्थान लोकप्रिय बन जाते हैं। किन्तु, कठिन क्षेत्रों में असाधारण पर्यटक, साहसिक पर्यटन के लिए निकलते हैं जिनमें नदी नौकायन, पर्वतारोहण, जल व हिम खेल या मंहगे जोखिम के खेल जैसे कि हैंग ग्लाइडिंग, पैरा–ग्लाइडिंग, गोल्फ खेलना और हेलीस्कीइंग शामिल हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर दीजिए:
   (क) किस प्रकार की पुलिनों को पर्यटन के लिए खर्चीला माना गया है?
   (ख) किन मदों को भारत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पर्यटन संसाधनों में शामिल किया गया है?
2. गर्मियों के दौरान पर्यटकों के लिए पर्वतों को आकर्षित बनाने के छः महत्वपूर्ण कारण बताएं।
3. निम्नलिखित में अन्तर स्पष्ट कीजिए:
   (क) पर्यटक और पर्यटन
   (ख) पर्यटक सृजित और पर्यटक गंतव्य क्षेत्र
4. आधुनिक पर्यटन की वृद्धि निर्धारित करने वाले कारकों को स्पष्ट कीजिए।
5. निम्नलिखित प्रत्येक कथन के लिए सही मद पर सही का चिन्ह लगाएं:
   (क) (i) समुद्र तल से 1200 से 2100 मीटर की ऊँचाई पर हिमालय में बड़ी संख्या पर्वतीय पर्यटक स्थल है।
   (ii) बड़ी संख्या में पहाड़ी पर्यटक स्थल 800 से 1200 मीटर की ऊँचाई पर हैं।

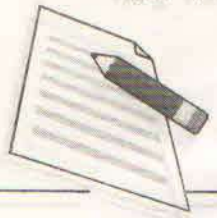

टिप्पणी

(ख) (i) शहर से पहाडी पर्यटक स्थल की निकटता, की स्थति बहुत लाभप्रद होती है।

(ii) शहर से पर्यटन स्थल की निकटता लाभप्रद होती है, चाहे वहाँ आसानी से न पहुँचा जा सके।

(iii) शहर से पहाड़ी पर्यटक स्थल की निकटता पर्यटकों का आना कम कर देती है।

(ग) (i) कोंकण और गोवा तट पर पुलिन पर्यटन विकसित नहीं किया जा सकता है।

(ii) केरल और गोवा तट पर पुलिन पर्यटन स्थल अधिक विकसित हैं।

(घ) (i) कई सम्प्रदायों और धर्मों की वृद्धि ने तीर्थ यात्रा केन्द्रों की संख्या को कई गुना बढ़ा दिया है।

(ii) लोगों ने किलों और महलों से ऊब कर तीर्थ यात्रा केंद्र विकसित किये हैं।

6. दिये गए भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित को दिखाइए।
राजस्थान का दुर्ग नगर, वे स्थान जहाँ मक्का और शाह हमादान मस्जिदें स्थित हैं, वे स्थान जहाँ जलियाँवाला बाग तथा सेलुलर जेल स्थित हैं, साबरमती आश्रम, स्थान जहाँ साँची स्तूप, टाबो मठ है, पश्चिम बंगाल का पर्वतारोहण संस्थान।

7. निम्नलिखित में अन्तर स्पष्ट कीजिए–
(क) पर्वतारोहण और पैदल भ्रमण (ख) नदी नौकायन और स्कूबा गोताखोरी (ग) स्केटिंग और हिमतरण (स्कीइंग) (घ) पैरा ग्लाइडिंग और हैंग ग्लाइडिंग

8. नीचे शब्दों के कुछ समूह दिये गये हैं। इन समूहों में से अप्रासांगिक शब्द को काट दीजिए।
(क) उज्जैन/काँगड़ा/जम्मू/वाराणसी/कोहिमा
(ख) ग्वालियर/लोहागढ़/दिलवाड़ा/जैसलमेर/गोलकुंडा
(ग) देव टिब्बा/रूपकुंड/हरमुख/राथांग/शिवलिंग
(घ) हल्दी घाटी/ऋषिकोंडा/माल्पी/गोपालपुर/अहमदपुर/माँडवी

9. निम्नलिखित के कारण बताइये–
(क) प्रवाल सागर स्कूबा गोता खोरी के लिए अधिक उपयुक्त है।
(ख) बाघों के लिए अनेक अभयारण्य हैं, लेकिन हंगुल, सोहन चिड़िया और गैंडे के लिए बहुत कम।
(ग) उत्तराखंड में बड़ी भारी संख्या में धार्मिक पर्यटक आते हैं, लेकिन फिर भी यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से अल्प विकसित है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

30.1

1. (क) अस्थायी (ख) कोई (ग) बाजार (घ) घरेलू

टिप्पणी

2. (क) ठहरने की अवधि, (ख) इस्तेमाल किया गया परिवहन का रूप, (ग) तय की गई दूरी, (घ) भ्रमण का उद्देश्य और (ङ) पर्यटकों द्वारा अदा की गई कीमत।

3. (i) घ, (ii) ग, (iii) क, (iv) ख

30.2

1. भारत में पर्यटन के लिए लगभग वर्ष भर का लम्बा समय होता है। इसलिए वो 'अमूल्य पर्यटक गंतव्य' कहलाता है।

2. कोलेरु झील एशिया की सबसे बडी ताजा जल की झील है। यह समुद्र से 32 कि.मी. दूर कृष्णा और गोदावरी के डेल्टाओं के बीच स्थित है।

3. 12वीं और 17वीं शताब्दी के बीच 455 वर्षों की अवधि में एक ही क्षेत्र में सात दिल्लियां निर्मित की गई।

30.3

1. (क) सवेतनक अवकाश का प्रावधान, (ख) भ्रमण रियायतें,

2. (क) आधारभूत सुविधाएं, (ख) प्रेरक/आकर्षक

30.4

1. (क) शिमला, (ख) शिलौंग, (ग) पहलगांव, (घ) नैनीताल

2. (क) नारियल/ताड़ से घिरा स्वास्थ्यवर्धक पर्यटक स्थल

   (ख) शान्त और कोष्ण समुद्र जल, (ग) शार्क मछली से मुक्त,

   (घ) जल तरण और तरंग क्रीड़ा जैसी क्रीड़ाओं के लिए आर्दश स्थल

3. (क) निखंडित दृश्य भूमि, (ख) शहर से निकटता, (ग) हिमरेखा से निकटता।

4. (क) जुहु, (ख) पुरी, (ग) मरीना

30.5

1. (क) बौद्ध, (ख) सिक्ख, (ग) हिन्दू, (घ) मुसलमान, (ङ) इसाई।

2. (क) (i) उत्तर में बद्रीनाथ, (ii) पश्चिम में द्वारका, (iii) पूर्व में जगन्नाथ पुरी, और (iv) दक्षिण में रामेश्वरम्।

   (ख) (i) पहाड़ी के शिखर पर, (ii) नदी संगमों पर (iii) झील के किनारें, (iv) वन उपवन, (v) द्वीप और बस्ती का केन्द्र (कोई तीन)

30.6

1. गुजरात में गीर, काश्मीर में दाचीगाम; आसाम में काजीरंगा या मानस; भरतपुर के पास घाना (राजस्थान), केरल में पेरियार।

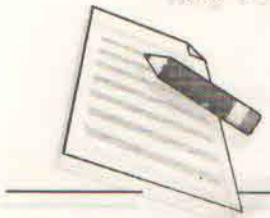

टिप्पणी

2. पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड और हिमाचल में क्रमशः दार्जिलिंग, उत्तरकाशी और मनाली में भारतीय पर्वतारोहण संस्थान हैं। ये संस्थान पर्वतारोहण और हिमतरण का प्रशिक्षण देते हैं और कार्यक्रम आयोजित करते हैं। विशेष मौसम बुलेटिनों के प्रसारण से पर्वतारोहियों की मदद करते हैं और आपातकालीन स्थिति में उन्हें बचाने में मदद करते हैं।

3. हैलीकॉप्टर हिमतरण पर फ्रांस में प्रतिबंध लगा दिया गया है। फ्रांस में क्योंकि वहाँ व्यक्तियों को गिराने और हेलीकॉप्टर की आवाज पर्वतीय जीव–जन्तुओं को परेशान करती हैं। कनाडा में भी इस पर प्रतिबंध है, क्योंकि यह खराब मौसम में शहरी सभ्यता से दूर स्थित है, पर्वतों पर आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता। काश्मीर में, गुलमर्ग को एक बहुत बड़ा लाभ यह है कि यह घाटी में है, और दोनों ही उसके बहुत अत्यधिक अनुकूल है।

पाठान्त प्रश्नों के संकेत

1. (क) अनुच्छेद 30.6 देखिए

   (ख) अनुच्छेद 30.7 देखिए

2. 30.9 के अंतर्गत (क) देखिए

3. (क) अनुच्छेद 30.1 देखिए

   (ख) अनुच्छेद 30.3 देखिए

4. अनुच्छेद 30.8 देखिए

5. (क) (i), (ख) (i), (ग) (iii), (घ) (iii)

6. पाठ में दिये मानचित्रों का प्रयोग करें।

7. (क) अनुच्छेद 30.9 (घ) को देखिए, (ख) 30.9 के अंतर्गत, (ग) 30.9 (घ) में जलीय खेलों को पढ़े; (घ) 30.9 (घ) में हैंग ग्लाइडिंग और पैरा ग्लाइडिंग देखें।

8. (क) कोहिमा; (ख) दिलवाड़ा, (ग) रूपकुण्ड; (घ) हल्दीघाटी

9. (क) अनुच्छेद 30.9 (घ) के अंतर्गत,

   (ख) क्योंकि यह जातियां दुर्लभ हो गई है और लुप्त होने की कगार पर हैं।

   (ग) तीर्थ स्थान, पर्यटक सुविधाओं में किसी के विकास का ध्यान किए बिना, लोगों की लम्बे समय से भक्ति की वजह से लोकप्रिय बन जाते हैं। उत्तराखंड में अन्य आकर्षक स्थान ज्यादातर अविकसित हैं।